चन्दामामा
अप्रैल १९७४
1
Re

Photo by : SURAJ N. SHARMA

DANCER FROM MYSORE

everest/547 PP hin

पालन-पोषण सही कीजिए ;
बच्चों को बोर्नविटा दीजिए!

पढ़ने लिखने में सर्वश्रेष्ठ... खेलकूद में आगे

पढ़ने और खेलने में बच्चों की खर्च हुई शक्ति की सही पूर्ति न हो तो इनका मानसिक और शारीरिक विकास अधूरा रह जाता है। रोज़ बोर्नविटा पीने से बच्चों की शक्ति बनी रहती है। पौष्टिक **कोको**, दूध, मॉल्ट और शक्कर के मिश्रण से बना हुआ बोर्नविटा बहुत ही स्वादिष्ट होता है।

शक्ति, उत्साह और
स्वाद के लिए—*कॅडबरिज़* **बोर्नविटा !**

OBM–0449-HIN.

CONTEST

WIN any one of the 5 (Five) Cheques already drawn and kept in sealed covers in the custody of Canara Bank, Bangalore, by guessing the Cheque amount correctly. Fill in the Coupon below and mail your entry to the NATIONAL PRODUCTS, 135, Kaval Byrasandra, Bangalore-560006.

If there are no correct entries the nearest guess wins the prize. If there are more than one successful entries the Cheque amount will be shared amongst them.

You can send any number of entries as you desire but every entry form must be accompanied by 10 (ten) empty wrappers of NP Crackies Strip pack.

Entries close on May 31, 1974 and the result will be published in The July Issue of Chandamama.

NO CORRESPONDENCE WILL BE ENTERTAINED AND THE DECISION OF THE NP MANAGEMENT IS FINAL.

CUT HERE

NO ENTRY FEE

Fill in ink legibly

Corrections and overwritings disqualify the entries.

Contest strictly governed by the rules and regulations laid down.

NP CRACKIES CONTEST ENTRY FORM • LAST DATE 31-5-1974

Prizes	Cheque Numbers	Amount of the cheque is between	FILL IN Your guess of the cheque amount Rs.	P
I	508183	Rs. 1501 and 2000		Nil
II	508184	1001 and 1500		Nil
III	508185	751 and 1000		Nil
IV	508186	501 and 750		Nil
V	508187	251 and 500		Nil

Name ____________________ Age ______

Address: ____________________

____

Date ____________ Signature of the contestant ____________

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बने हुए

हिन्दुस्तान सैनेटरीवेयर एण्ड इण्डस्ट्रीज़ लिमिटेड

सोमानी-पिलकिंगटन्स लिमिटेड

२ वेलेसली प्लेस, कलकत्ता-७०० ००१

चन्दामामा

संस्थापक : नागिरेड्डी

संचालक : 'चक्रपाणी'

इस महीने की बेताल कथा 'परिस्थियों का प्रभाव' यथार्थ का उद्घाटन करती है। असमर्थ राजा वास्तविक समस्याओं के लिए अवास्तविक हल ढूंढ़ना चाहे तो उसका परिणाम कैसा होता है, 'भूख की दवा' नामक कहानी साबित करती है।

अच्छे उपदेश भी सबके लिए उपयोगी नहीं हो सकते। अनेक लोगों के मन में अपने उपदेशों के प्रति भी विश्वास नहीं होता। इसलिए उपदेश देनेवाले की अपेक्षा सुननेवाला ही लाभ उठा सकता है। 'भाग्य का खेल' इसका प्रमाण है।

वर्ष : २६ अप्रैल १९७४ अंक : १०

पिबंति नद्य स्स्वयमेव नांभः,
खादंति न स्वादु फलानि वृक्षाः,
पयोधरा स्सस्य मदंति नैव
परोपकाराय सताम विभूतयः ॥ १ ॥

[नदियाँ स्वयं पानी नहीं पीतीं, वृक्ष अपने फलों का भक्षण नहीं करते, मेघ (अपने पैदा की गयी) फ़सल नहीं खाते । इसी प्रकार उत्तम व्यक्ति अपनी संपति परोपकार में लगाते हैं ।]

श्लोकार्थेन प्रवक्ष्यामि यदुक्तम् ग्रन्थकोटिभिः
परोपकारः पुण्याय, पापाय परपीड़नम् ॥ २ ॥

[अनेक ग्रन्थों में बतायी गई बातों को मैं आधे श्लोक में बताता हूं, परोपकार पुण्य के वास्ते तथा दूसरों को पीड़ा देना पाप के लिए होते हैं ।]

आत्मार्थम् जीव लोकेस्मिन को न जीवति मानवः?
परम् परोपकार्थम् यो जीवति स जीवति ॥ ३ ॥

[इस प्राणी जगत में ऐसा कौन है जो अपने लिए जीता न हो, पर परोपकार के वास्ते जो जीता है, उसी का जीवन सच्चा है ।]

यक्ष पर्वत

[२२]

[गुरु भल्लूक के शिष्यों की बातों में आकर वीरपुर का सेनापति अपने सैनिकों के साथ सुरंग के दुर्ग में उतरा। मौक़ा पाकर खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने सुरंग दुर्ग के द्वार पर आग लगाने का प्रबंध किया और भीतर में स्थित वीरपुर के सैनिकों को हथियार डाल देने का आदेश दिया। बाद–]

सुरंग के दुर्ग में दुश्मन की खोज करने वाले वीरपुर के सेनापति को सुरंग के द्वार से जीवदत्त की चेतावनी सुनाई दी। वह पहले विस्मय में आ गया। इतने में सुरंग के द्वार से भीतर आनेवाले धुएँ को देख वह घबरा उठा। सेनापति और उसके सैनिकों ने सुरंग के सभी कमरों में ढूंढ़ा, पर उन्हें एक भी आदमी दिखाई न दिया। दो-तीन मृत भेड़िये, इधर-उधर बिखरे पड़े भालू के चमड़े तथा तलवार-भाले मात्र उन्हें दिखाई दिये।

सेनापति ने अपने सैनिकों को निकट बुलाकर आज्ञा दी–" जंगल में भालू जाति के जो दो युवक हमारे बंदी हुए, उन्हें मेरे सामने तुरंत हाज़िर कर दो। उन दोनों ने हमको बड़ी आसानी से धोखा दिया और भेड़ियों वाले इस सुरंग में फँसा दिया।"

दो सैनिक गुरुभल्लूक के शिष्यों की बाँहें पकड़ कर खींच लाये और सेनापति के सामने खड़ा किया। सेनापति ने म्यान से तलवार खींचकर ललकारा–"अरे दुष्टो, तुमने हमें धोखा दिया। यहाँ पर हमारा दुश्मन नहीं है। सच-सच बताओ, वे लोग कहाँ छिपे बैठे हैं, वरना अभी मैं तुम दोनों के टुकड़े-टुकड़े करने जा रहा हूँ।"

भल्लूक के शिष्य ये बातें सुन ज़रा भी विचलित हुए बिना बोले–"हमने अपने गुरु की आज्ञा का पालन किया, इस बात की हमें बड़ी खुशी है। अब हमें मौत का कोई डर नहीं है।" तदुपरांत सिर उठाकर सुरंग दुर्ग की ओर देखते बोले–"सुनते हैं, क्षत्रिय योद्धा खड्गवर्मा और जीवदत्त तुम लोगों को हथियार डालकर आत्म समर्पण करने की एक बार और चेतावनी दे रहे हैं। उनकी शरण में न जाओगे तो तुम सब आग की उन लपटों में जलकर भस्म हो जाओगे या उस धुएँ से दम घुटकर मर जाओगे। इसलिए अभी तुम लोग फ़ैसला कर लो कि तुम्हें कौन चीज़ पसंद है?"

सेनापति को लगा कि पहले यह जान ले कि वे दोनों क्षत्रिय योद्धा कौन हैं और समरबाहु के साथ उनका क्या संबंध है? मगर पूरा समाचार जानने के लिए उनके पास वक़्त न था। उल्टे ऊपर से धधकनेवाली लपटें व जलकर सुरंग में उड़कर आनेवाले सूखे पत्ते देख सैनिक घबरा गये और एक दूसरे को धकेलते इधर-उधर भागने लगे। उसे तुरंत कोई निर्णय कर लेना था।

वीरपुर का सेनापति समझ गया कि वह कैसे खतरे में फंस गया है। उसने यह भी जान लिया कि जान बचाने के लिए आत्म समर्पण करने के सिवाय दूसरा कोई चारा नहीं है। उसने अपने हथियार नीचे डाल दिये और अपने सैनिकों को भी आदेश दिया कि वे सब भी हथियार डाल दें। तब सुरंग द्वार की

ओर देखते चिल्ला उठा–"सुरंग द्वार के ऊपर रहनेवाले हे क्षत्रिय योद्धाओ, मैं. वीरपुर का सेनापति अपने सैनिकों के साथ आत्म समर्पण कर रहा हूँ। बिना हथियार के मैं सुरंग के ऊपर आ रहा हूँ। आप लोग पहले आग की लपटों को बुझवा दीजिए।"

सेनापति की चिल्लाहट खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को सुनाई दी। उन्होंने भालू जाति के युवकों को तत्काल आदेश दिया कि जलती लकड़ियों को चुनकर दूर पर फेंक दे। उनका आदेश मिलने की देरी थी कि तुरंत जलती लकड़ियों को खींचकर दूर फेंका गया। तब खड्गवर्मा और जीवदत्त सुरंग की सीढ़ियों के पास गये और भीतर झांककर देखा। उन्हें उस धुंधली रोशनी में सुरंग के भीतर वीरपुर का सेनापति और सैनिक दिखाई दिये।

"खड्गवर्मा, सेनापति की बातें सच्ची मालूम होती हैं। क्या उन्हें ऊपर बुला ले?" जीवदत्त ने पूछा।

खड्गवर्मा के उत्तर देने के पहले ही गुरु भल्लूक वहाँ पर आया और जीवदत्त से बोला–"महाशय, राजा और उनके सेवक विश्वास करने योग्य नहीं होते। पहले मेरे शिष्यों को ऊपर बुलवा कर उनके द्वारा असली बात जान लेना अच्छा

होगा! तब हम लोग कोई निर्णय ले तो ज्यादा उचित होगा।"

"कुटिल की चाल कुटिल ही जनता है!" यों कहते जीवदत्त हँस पड़ा और बोला–"अच्छी बात है! भल्लूक! तुम पहले अपने शिष्यों को ऊपर आ जाने का आदेश दो।"

गुरु भल्लूक ने अपने हाथ के भाले को ऊपर उठाकर चिल्लाया–"वृकेश्वरी माता की जय!" उसकी चिल्लाहट से सुरंग का द्वार गूँज उठा, तब फिर चिल्लाया–"अरे शिष्यो, पहले तुम दोनों सुरंग के ऊपर आ जाओ। तब तक वीरपुर के सैनिकों को वहीं पर रहने को बतला

दो।" इसके बाद वह समरबाहू की ओर आँख का इशारा करके बोला–" यह हमारे पहाड़ी दुर्ग के महाराजा समरबाहू का आदेश है!"

अपने गुरु का आदेश पाते ही भल्लूक के दोनों शिष्य सीढ़ियाँ पार कर सुरंग के ऊपर आ गये। सुरंग में स्थित वीरपुर का सेनापति यह मोच कर डर गया कि वह एक गजा, दो क्षत्रिय योद्धा तथा क्रूर भल्लूक जाति के दल के हाथ बन्दी हो गया है। उमकी देह पमीने से तर हो गयी। उसे इस बात का डर सताने लगा कि उन लोगों में से कोई भी उससे ना खुश हुआ तो उसकी जान लेगा...

भल्लूक के शिष्यों ने खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को सुरंग का सारा समाचार सुनाकर यह बताया कि वीरपुर के सेनापति और सैनिकों ने हथियार डाल दिये हैं। तब खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने वीरपुर के सेनापति तथा उसके सैनिकों को सुरंग के ऊपर आने का आदेश दिया, और सभी अनुचरों को हथियारों के साथ सावधान रहने की चेतावनी दी।

वीरपुर का सेनापति सुरंग के ऊपर आते ही खड्गवर्मा और जीवदत्त को प्रणाम करने को हुआ, तब जीवदत्त ने उसे समरबाहू को दिखाते हुए कहा– "ये इस प्रदेश के राजा हैं; चन्द्रवंशी हैं। नाम इनका समरबाहू है। इन्होंने ही तुम लोगों को अपनी बुद्धि और शक्ति के बल पर पराजित किया है। तुम लोगों को इन्हीं राजा के अधीन होना चाहिए; समझें।"

वीरपुर के सेनापति ने सिर झुका कर समरबाहू को प्रणाम किया। उसके पीछे बाक़ी सैनिक भी सुरंग से बाहर आ गये। समरबाहू ने उन सब को सुरंग के सामने स्थित एक छोटे मैदान में खड़े हो जाने की आज्ञा दी, तब राजसी ठाठ में स्वर्णाचारी से पूछा–"महा मंत्री, हम इन दुश्मनों को कैसा दण्ड दें?"

स्वर्णाचारी थोड़ी देर तक सोचता रहा। तब खड्गवर्मा तथा जीवदत्त से सलाह-मशविरा करके समरबाहू से बोला– "महाराज, इन्हें हम किस प्रकार का दण्ड दे, यह बात आगे जाकर वीरपुर का राजा हमारे साथ जैसा व्यवहार करने जा रहा है, इस पर निर्भर होगा। पहले हम इन सब को हमारे पहाड़ी दुर्ग में ले जाकर बन्दी बनायेंगे।"

"बहुत अच्छी बात है; तुमने बढ़िया सलाह दी।" समरबाहू ने स्वर्णाचारी की सलाह की तारीफ़ की।

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त यह देखकर चकित रह गये कि तब तक केवल लुटेरों के दल का एक नेता बने हुए समरबाहू की बातों और व्यवहार में अचानक कैसे ये राजोचित लक्षण आ गये।

"छोटी सी विजय तथा थोड़े से अधिकार ने चन्द मिनटों के अंदर एक लुटेरे समरबाहू के भीतर कैसे परिवर्तन ला दिये?" खड्गवर्मा ने जीवदत्त के कान में धीरे से कहा।

"मुझे इस बात का संदेह हो रहा है कि हम एक लुटेरे को राजा बनाने जा रहे हैं। वीरपुर के राजा ने अब तक हमारी शक्ति और सामर्थ्य का परिचय पाया होगा और उसका कलेजा कांपता
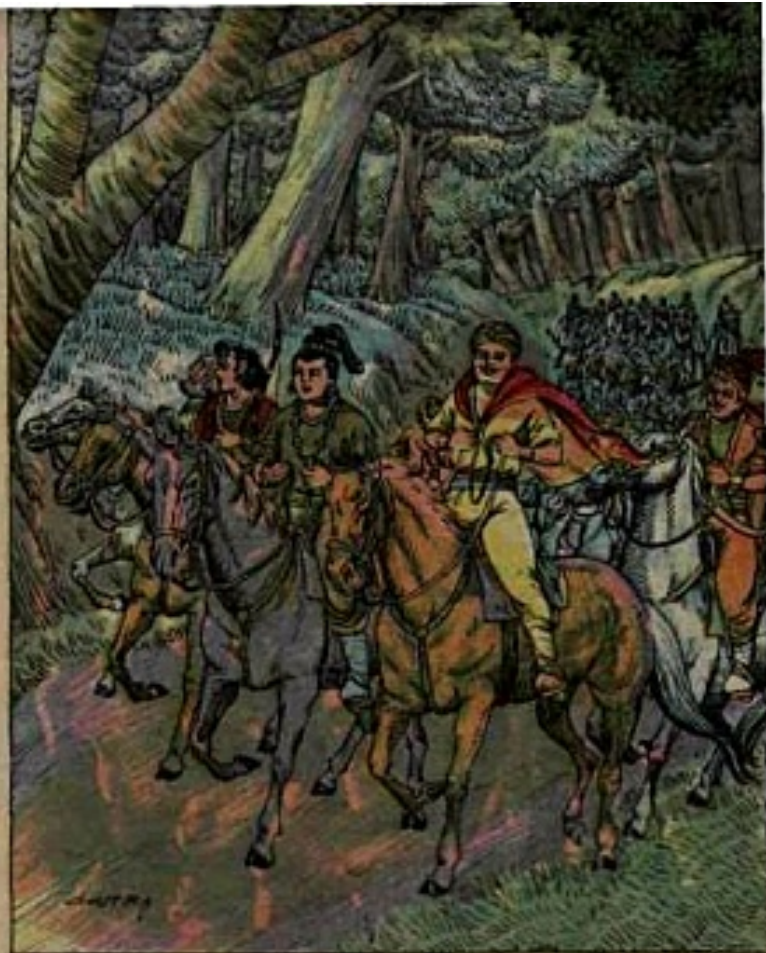
होगा। आसपास की सभी जंगली जातियों के लोग उसके ख़िलाफ़ हैं। इसलिए इस पहाड़ी दुर्ग में समरबाहू राजा बनकर रह जाएगा।" जीवदत्त ने कहा।

थोड़ी दूर पर स्थित समरबाहू खड्गवर्मा तथा जीवदत्त के निकट आते बोला– "क्षत्रिय योद्धाओ, लगता है कि आप लोग परस्पर कोई चर्चा कर रहे हैं। क्या अब हम लोग पहाड़ी दुर्ग की ओर चलें?"

"राजा के आदेश का कौन तिरस्कार कर सकता है? चलो, चल चलें!" जीवदत्त ने जवाब दिया।

ऊँटों तथा घोड़ों पर सवार हो समरबाहू के थोड़े अनुचर आगे, थोड़े लोग पीछे

चल पड़े। वीरपुर के बन्दी सैनिकों को बीच में रखा गया। बिना सवार वाले कुछ ऊँटों और घोड़ों को पैदल चलवाते अपने गुरु के साथ भालू जाति के दल के लोग चल पड़े। सब से आगे समरबाहू, स्वर्णाचारी, खड्गवर्मा और जीवदत्त घोड़ों को हाँकते चल पड़े।

सब लोग थोड़ी ही देर में पहाड़ी दुर्ग तक पहुँचे, पहाड़ी तले में स्थित पेड़ों के नीचे एक छोटा सा खेमा तथा उसके सामने एक ऊँचे आसन पर बैठा एक वृद्ध और उसके चारों तरफ़ एक छोटा सा दल भी खड्गवर्मा और जीवदत्त को दिखाई दिया।

"समरबाहू, यह क्या? वीरपुर का राजा स्वयं तुम्हारे सिर पर किरीट रखकर तुम्हें इस प्रदेश का राजा बनाने के लिए तो यहाँ पर नहीं आया है?" जीवदत्त ने आश्चर्य पूर्ण शब्दों में कहा।

समरबाहू कोई जवाब देने ही वाला था, तभी वृद्ध आसन से उतरा, दो सेवकों के साथ खड्गवर्मा तथा जीवदत्त की ओर बढ़ा। इसे देख वे दोनों घोड़ों से उतरे ओर उसकी ओर बढ़े।

वृद्ध ने उन दोनों की ओर हाथ उठाकर शांति के साथ हिलाया और कहा—"मैं वीरपुर के राजा का मंत्री हूँ। हमारे गुप्तचरों ने आप लोगों का जो वर्णन किया है, यदि उसमें कोई गलती न हो तो आप महान योद्धा खड्गवर्मा और जीवदत्त होंगे!"

खड्गवर्मा तथा जीवदत्त ने वृद्ध को प्रणाम किया। तब जीवदत्त ने मंत्री से कहा—"महामंत्री, लगता है, बहुत समय से जंगलों में भटकने वाले हमारे संबंध में आप ने अपने गुप्तचरों के द्वारा अत्यधिक समाचार का संग्रह किया है। पर इसका कारण हमारी समझ में नहीं आ रहा है।" यों कहकर जीवदत्त मुड़कर अपने पीछे आने वाले समरबाहू तथा स्वर्णाचारी को उसे दिखाते बोला—"ये हैं पहाड़ी

दुर्ग के राजा समरबाहु और ये उनके महामंत्री स्वर्णाचारी हैं।"

राजा और मंत्री का नाम सुनते ही वीरपुर के महामंत्री ने मुंह सिकोड़ लिया, फिर मुस्कुराहट का अभिमान करते बोला— "मैंने थोड़ी देर पहले ही अपने गुप्तचरों के द्वारा जान लिया कि इस राजा ने हमारे सेनापति तथा सैनिकों को कैसी कुशलता के साथ हराकर बन्दी बनाया है। अपनी शक्ति के बल पर जीतने वाले राजा समरबाहु इन प्रदेशों पर निश्चित हो राज्य कर सकते हैं। यह बात मैं अपने महाराजा की तरफ से कह रहा हूँ। लेकिन मैं आप दोनों के वास्ते आया हूँ... आप लोगों से एकांत में बात करनी है।"

इस पर जीवदत्त ने समरबाहु तथा स्वर्णाचारी से कहा—"तुम लोगों ने वीरपुर के महामंत्री की बात सुन ली है न? अब इस पहाड़ी दुर्ग के शासन-कार्यों में अपना समय लगाओ। मैं समझता हूँ कि वीरपुर के सेनापति तथा सैनिकों को मुक्त करने में तुम लोगों को कोई आपत्ति न होगी।"

समरबाहु ने स्वर्णाचारी की ओर देख सिर हिलाया। स्वर्णाचारी ने वीरपुर के महामंत्री से कहा—"महामंत्री, इस बात की क्या उम्मीद है कि आप के राजा एक और बार हम पर हमला नहीं कर बैठेंगे?"

"हमारे राजा ने आप लोगों को यह सूचित करने को बताया है कि आइंदा आप लोगों पर कोई हमला न होगा। हमारे राजा जो वचन देते हैं, उससे कभी मुकरते नहीं।" वीरपुर के महामंत्री ने समझाया।

यह उत्तर समरबाहु को संतुष्ट कर सका। उसका आदेश पाते ही वीरपुर के सेनापति व सैनिक मुक्त किये गये। उन लोगों ने प्रसन्नता पूर्वक कोलाहल करते अपने महामंत्री को प्रणाम किया। उनमें से कुछ लोगों ने समरबाहु तथा स्वर्णाचारी के प्रति कृतज्ञता प्रकट की।

समरबाहु बड़ी आसानी से राजा बन बैठा है, इस पर खुश होते हुए समरबाहु ने

वीरपुर के सैनिकों से कहा—"आज तुम सब मेरे अतिथि हो! कल सुबह यहाँ से रवाना होकर तुम लोग अपनी राजधानी को जा सकते हो।"

इसके बाद समरबाहू के अनुचर, भालू दल के लोग और वीरपुर के सैनिक चिर काल के मित्रों की भाँति वार्तालाप करते, परस्पर परिहास करते पेड़ों के नीचे घूमने लगे। पर वीरपुर का महामंत्री खड्गवर्मा तथा जीवदत्त को साथ लेकर थोड़ी दूर गया, तब बोला—"हे वीर योद्धाओ, तुम लोगों के बारे में मैंने अपने गुप्तचरों के द्वारा काफी समाचार जान लिया था, पर कल रात को एक यक्ष के द्वारा मैंने और ज्यादा समाचार जान लिया है।"

"यक्ष के द्वारा? कौन है वह यक्ष?" जीवदत्त ने आश्चर्य प्रकट किया; तब खड्गवर्मा से बोला—"खड्गवर्मा, वह यक्ष क्या पद्मपुर की राजकुमारी पद्मावती का अपहरण कर ले जानेवाला तो नहीं है?"

खड्गवर्मा भी आश्चर्य में डूबा हुआ था। पर वीरपुर का महामंत्री उन्हें कोई उत्तर दिये बिना आगे की ओर बढ़ता गया। सामने वाले एक छोटे टीले पर खड़े हो, नीचे बहने वाली एक नदी की ओर हाथ का संकेत करते बोला—"वीरो, नदी में दीखने वाली उस नाव की ओर ध्यान से देख लो।"

खड्गवर्मा और जीवदत्त ने उस नाव की ओर देखा। वह शिला रथ की आकृति की थी, जिस रथ की आकृति के संबंध में उन दोनों ने पद्मपुर में सुना था और अरण्यपुर में देखा भी था। जीवदत्त उत्साह में आकर अपने दण्ड को हाथ में लेकर बोला—"ओह, इतने समय बाद वह दुष्ट यक्ष हमारे साथ युद्ध करने के लिए तैयार होकर आया हुआ मालूम होता है। खूब है! हम अपनी शक्ति का उसे परिचय देंगे।" यों कहते जीवदत्त नदी की ओर बढ़ा। (और है)

परिस्थितियों का प्रभाव

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया, पेड़ पर से शव उतार कर कंधे पर डाल सदा की भाँति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा, तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, तुम सचमुच दृढ़ निश्चयी मालूम होते हो। किसी दूसरे की सहायता के बिना ही तुमने इस जोखिम से भरे काम को उठाया है। कई लोग नीलदत्त की भाँति विघ्नों के पैदा होने पर निराश हो जाते हैं। श्रम को भुलाने के लिए मैं तुम्हें नीलदत्त की कहानी सुनाता हूँ, सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: बहुत समय पूर्व विजयपुरी सामक नगर में सोमनाथ नामक एक नौका व्यापारी था। उसने अनेक विदेशों के साथ व्यापार करके करोड़ों रुपये कमाये थे; उसी सोमनाथ का इकलौता पुत्र नीलदत्त है। नीलदत्त जब

बेताल कथाएँ

युवा हो गया, तब सोमनाथ अपनी नौकाओं में माल भर कर समुद्री यात्रा पर चल पड़ा। रास्ते में तूफ़ान के शिकार हो उसकी सारी नौकाएँ डूब गयीं। कई लाखों रुपयों के मूल्य के माल के साथ सोमनाथ भी समुद्र में डूब गया।

दो साल बीत गये; मगर सोमनाथ लौट कर नहीं आया। उसकी पत्नी इसी चिंता में बीमार पड़ गई और घुल घुल कर मर गयी। व्यापार में सोमनाथ के साथ साझा रखने वाले अन्य व्यापारियों ने गलत हिसाब दिखाकर सोमनाथ की सारी जायदाद को हड़प लिया। नीलदत्त सिर्फ़ मजे के साथ दिन काटना जानता था। रुपये-पैसों की जिम्मेदारी उसने कभी अपने ऊपर न ली थी। इसलिए उसने अपने पिता की जायदाद में से थोड़ा-सा अंश भी बचाने का प्रयत्न नहीं किया, अलावा इसके वह व्यापार का मर्म भी नहीं जानता था और इस तरह से वह अनाथ हो गया।

गरीब नीलदत्त की सहायता किसी रिश्तेदार ने नहीं की। लेकिन सोमनाथ के बचपन के मित्र नवकुबेर ने नीलदत्त को आश्रय देकर अपने घर में रख लिया।

नवकुबेर उस देश के राजा के अत्यंत निकट मित्र था। वह अकसर राजमहल में जाता और राजा से बात करके लौटता था। एक बार नवकुबेर अपने साथ नीलदत्त को राजमहल में ले गया। तब राजकुमारी लावण्यवती नीलदत्त को देख उसके सौंदर्य पर मुग्ध हो गयी। उसने मन में सोचा कि ऐसा सुंदर व्यक्ति उसका पति बन जाए तो उसका जन्म धन्य हो जाएगा। जब राजकुमारी को यह मालूम हुआ कि नीलदत्त एक समय बड़ा धनी था, पर फिलहाल वह निर्धन है और नवकुबेर के आश्रय में पल रहा है, तब उसे उस पर बड़ी दया आयी। फिर भी उसने अपने विचार को नहीं बदला।

पर नीलदत्त को अपनी हालत की याद करने पर अपने प्रति घृणा पैदा हो जाती

थी। वह सोचने लगा कि वह नवकुबेर के घर जितने भी दिन रहेगा, उसकी हालत में कोई परिवर्तन न होगा। यदि वह स्वतंत्र रूप से कुछ करना भी चाहे तो उसके पास धन नहीं है, दूसरों के आश्रय में जब तक वह रहेगा तब तक वह स्वेच्छा पूर्वक कुछ कर भी न सकेगा। इसलिए एक दिन रात को नीलदत्त नवकुबेर के घर से थोड़ा धन और हीरे तथा जवाहरात चुराकर गुप्त रूप से भाग खड़ा हुआ। उसका विचार था कि उन्हें कहीं बेचकर उस धन से इज्जत के साथ अपनी ज़िंदगी बसर करे।

लेकिन उसी रात को नीलदत्त नगर-रक्षकों के हाथों में पड़ गया। लेकिन वह नगर-रक्षकों से यह बात बता न पाया कि वह कौन है, उस गठरी में कौन-सी चीजें हैं? उस अर्द्धरात्रि के समय वह उन्हें लेकर कहाँ जा रहा है? इसलिए नगर-रक्षकों ने उसे अपराधी माना, रात भर उसे कारागार में रखा और सवेरे राजदरबार में ले जाकर उसे राजा के सामने हाज़िर किया।

आखिर यह बात प्रकट हो गयी कि नीलदत्त के हाथ की गठरी में जो गहने व रुपये हैं, वे नवकुबेर के हैं। राजा यह जानता था कि नीलदत्त नवकुबेर के आश्रय में रहता है। विश्वासघातक तथा चोर नीलदत्त को राजा कठोर दण्ड तो देना चाहता था, पर नवकुबेर ने बीच में दखल देकर राजा से प्रार्थना की कि उसे छोड़ दिया जाय। राजा ने नीलदत्त को केवल देश निकाला दण्ड दिया।

नवकुबेर ने नीलदत्त को वे सारे गहने व रुपये देकर समझाया—"बेटा, तुम कहीं जाकर आराम से अपने दिन बिताओ।"

नीलदत्त चोर के रूप में पकड़ा गया था, फिर भी राजकुमारी ने उससे घृणा नहीं की बल्कि इस बात पर वह दुखी हुई कि नीलदत्त को देश निकाला दण्ड दिया गया है।

नीलदत्त विजयपुर को छोड़ अवंतीपुर पहुँचा और वहाँ पर थोड़ा समय वैभव के साथ बिताया। वह यह निर्णय कर भी न पाया कि किस तरह वह स्वतंत्रता पूर्वक जीवन यापन करे, इसी बीच उसके हाथ का सारा धन खर्च हो गया। इसके बाद वह चोर के रूप में बदल गया। चोरी करने में निपुणता प्राप्त करके वह एक मशहूर डाकू बन बैठा।
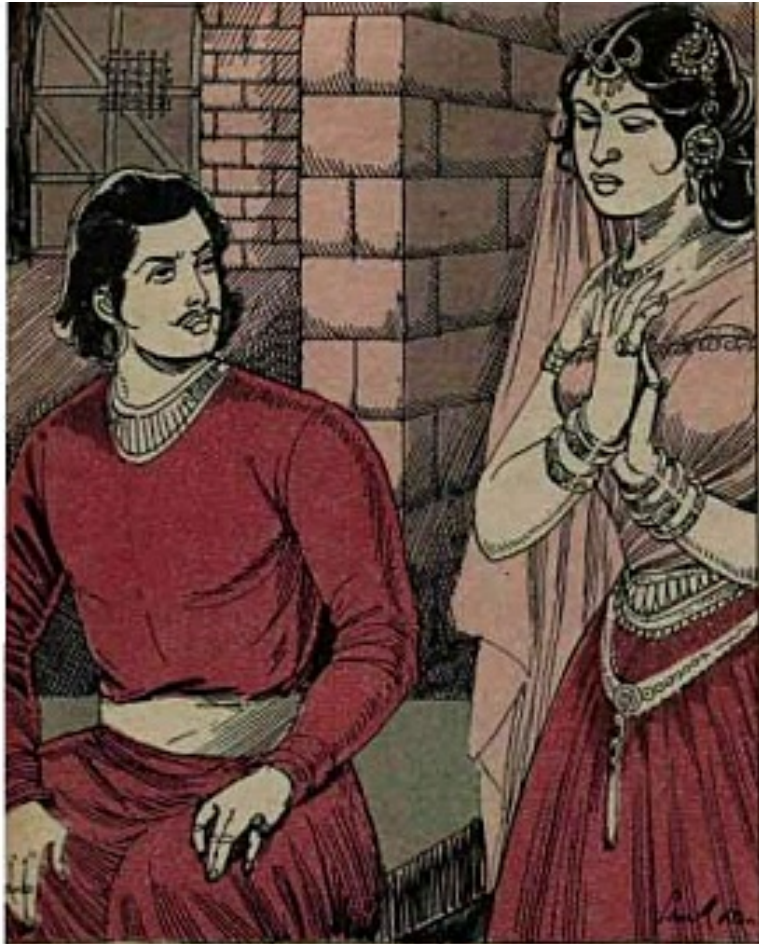
चोरी करने की विद्या में कुशल बनने के बाद नीलदत्त के मन में अपने देश में लौटने की इच्छा हुई। एक दिन रात को वह पहरेदारों की आँखों में धूल झोंक कर विजयपुरी में पहुँचा। वहाँ पर वह सफलता पूर्वक चोरियाँ करते अपने दिन काटने लगा। पर वह राजकुमारी को भूल न पाया। एक दिन उसके मन में राजकुमारी को देखने की इच्छा हुई। इस इच्छा की पूर्ति के लिए एक दिन रात वह राजमहल में पहुँचा। एक एक कमरा ढूंढ़ते वह राजकुमारी के कमरे में घुसने को था, तभी पहरेदारों के हाथ में पड़ गया।

दूसरे दिन राजा ने सुनवाई की और इस अपराध में कि नीलदत्त ने देश निकाले दण्ड का उल्लंघन किया तथा राजमहल में चोरी करने का प्रयत्न किया, इसलिए उसे आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई। पर राजा यह नहीं जानता था कि नीलदत्त डाकू के रूप में उसी के राज्य में अपने दिन बिता रहा है, यह बात मालूम हो जाती तो उसे अवश्य फांसी की सज़ा सुना देता।

लावण्यवती ने नीलदत्त के बारे में सुना, वह गुप्त रूप से कारागार में गयी और उससे पूछा—"नीलदत्त, मैं किसी न किसी उपाय से तुमको मुक्त कराऊँगी, क्या इस देश को छोड़कर जाने को तैयार हो?"

"राजकुमारी, मैं कहीं जी नहीं संकता। मैं कोई काम करना नहीं जानता, मैं बिलकुल असमर्थ हूँ। मुझे यह कारागार ही अच्छा लगता है।" नीलदत्त ने जवाब दिया।

राजकुमारी ने कारागार के अधिकारी को घूस दिया, अकसर नीलदत्त को देखने आती और उसके लिए सारी सुविधाएँ करवा दीं। धीरे धीरे उनके बीच प्यार बढ़ता गया।

एक वर्ष बीत गया। इस बीच अवंतीपुर के राजा रामसिंह की पट्टमहिषी का देहांत हो गया। रामसिंह ने लावण्यवती की सुंदरता के बारे में पहले ही सुन रखा था, इसलिए उसने लावण्यवती के साथ विवाह करके उसे अपनी पट्टमहिषी बनाने का निश्चय किया। उसकी ओर से एक दूत ने आकर विजयपुरी के राजा से कहा—"महाराज, अवंतीपुर का महाराज आपकी पुत्री के साथ विवाह करना चाहते हैं। यदि आप इसे अस्वीकार करेंगे तो वे आप के देश पर हमला कर बैठेंगे।"

अवंती का राजा शक्तिशाली था। उसके साथ युद्ध करके विजयपुरी का राजा किसी भी हालत में जीत नहीं सकता था। इसलिए विजयपुरी के राजा ने अपनी पुत्री लावण्यवती का रामसिंह के साथ विवाह करने की स्वीकृति दे दी।

यह खबर सुनते ही मानो लावण्यवती के सिर पर गाज गिर गयी। उसे लगा कि रामसिंह जैसे वृद्ध की पत्नी बनने की अपेक्षा मर जाना कहीं बेहतर है। उसी रात को लावण्यवती ने कारागार में नीलदत्त से मिल कर सारी बातें सुनाईं और पूछा—"हम दोनों किसी दूर के देश में भाग जाएँगे और वहाँ आराम से जीयेंगे, तुम्हें कोई आपत्ति नहीं है न?"

नीलदत्त ने भी राजकुमारी की बात मान ली। इस पर उसी रात को वे दोनों विजयपुरी छोड़कर चले गये।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा—"राजन्, लावण्यवती ने मूर्खतावश नीलदत्त के साथ भाग कर सुख-वैभव को क्यों दूर किया? क्या वह यह नहीं जानती थी कि नीलदत्त कोई काम नहीं कर सकता है। वहाँ से भागने के बदले आजीवन कारागाह

की सज़ा को उत्तम माननेवाला नीलदत्त उसे साथ लेकर भाग जाने के लिए क्यों मान गया? उसका पोषण करने के बारे में क्या उसने कुछ विचार ही नहीं किया? क्या प्यार ने उन दोनों को अंधा बना दिया? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे, तो तुम्हारा सिर टुकड़े टुकड़े हो जाएगा।"

इस पर विक्रमार्क ने उत्तर दिया– "नीलदत्त ने भले ही कह दिया हो कि वह असमर्थ है, परंतु राजकुमारी अक़्लमंद हो तो उसकी बात पर उसे विश्वास करने की ज़रूरत नहीं। अगर वह असमर्थ होता तो देश निकाले दण्ड की परवाह किये बिना विजयपुरी को लौट कर नहीं आता। यदि आ भी जाता तो राजमहल में कभी न जाता। वह चोरी करने जाता तो खज़ाने की ओर जाता, तब राजकुमारी के कमरे के निकट पकड़ा नहीं जाता। राजकुमारी यह बात आसानी से समझ सकती है कि नीलदत्त का यह कहना कि उसे कारागार का जीवन ही सुखमय है, इसका मतलब राजकुमारी उसे गुप्त रूप से देखने आती है। अलावा इसके शायद राजकुमारी ने नीलदत्त के साथ प्यार किया है, बूढ़े राजा की पत्नी बनने की अपेक्षा नीलदत्त की पत्नी बनकर साधारण जीवन बिताना कहीं उत्तम है। वह यह नहीं जानती थी कि साधारण जीवन कैसा होता है। इसलिए इसका डर भी उसके मन में न होगा। अब रही नीलदत्त की बात। वह राजकुमारी के निकट रहना चाहता था, इसलिए उसे उस राजकुमारी के साथ कहीं भी जाने के लिए कोई एतराज़ न होगा। यह सवाल ही नहीं उठता कि नीलदत्त राजकुमारी का पोषण कैसे करेगा? वह नामी डाकू है। वह चोरी करते पकड़ा नहीं गया। यह पेशा वह किसी भी देश में चला सकता है।"

राजा के इस तरह मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा। (कल्पित)

कंजूस और गरीब

एक गाँव में एक ब्याज का व्यापारी था। उसने अपने व्यापार में लाखों रुपये कमाये, पर वह अव्वल दर्जे का कंजूस था। वह भरपेट खाना तक न खाता था, तिजोरी में धन जोड़ते उसे देख-देखकर खुश हो जाता था।

एक दिन उस व्यापारी के यहाँ एक गरीब आया, वह उस व्यापारी का एक कर्जदार था। वह कर्ज की रकम लौटाते हुए बोला–"सेठजी, आपको जो धन वापस करना है, उससे थोड़ा ज्यादा ही दूँगा, मगर मुझे एक बार आपकी तिजोरी में रखे धन को अपनी आँखों से देखने देंगे?"

देखने से क्या जाता है, देखने के एवज में यह ज्यादा धन देना चाहता है, उसे क्यों छोड़ दूँ? यह सोचकर ब्याज के व्यापारी ने अपना धन दिखाने को मान लिया।

इसके बाद गरीब ने तिजोरी में रखे धन को देखकर कहा–"सेठजी, अब मैं भी तुम जैसा अमीर हो गया हूँ?"

"यह तुम क्या कहते हो?" सेठ ने पूछा।

"तुम भी इस धन को देखने के सिवाय इसका क्या उपयोग करते हो? उस धन को मैंने भी देख लिया है। खान-पान और पहनावे में मैं तुमसे किसी बात में कम नहीं हूँ, अच्छा खाता-पहनता हूँ।" यों कहते गरीब सेठ से विदा लेकर चला गया।

मोम बत्ती का फ़ैसला

महाराजा उग्रगुप्त की राजधानी नगरी मिलनगढ़ अत्यंत सुंदर है। उसमें अनेक सुंदर भवन, साफ़ सुथरे मार्ग, मन को लुभानेवाले तड़ाग और उद्यान भी थे। जनता सुखी और संपन्न थी। महाराजा उग्रगुप्त पड़ोसी राज्यों के साथ मैत्रीभाव रखता था, इस वजह से उसका देश सदा अकाल और युद्ध के भय से मुक्त रहता था।

वह दीपावली का दिन था। उस रात को मिलनगढ़ के सभी घरों, उद्यानों तथा मार्गों में भी दीपमाला सजाई गई थी। रंग-बिरंगे तोरण बाँधे गये थे। सारा नगर विनोद के कार्यक्रमों में डूबा हुआ था।

राजमहल के प्रत्येक गवाक्ष, आले और खिड़कियों में भी मोम की बत्तियाँ जलाकर रखी गयी थीं। वह महल देखने में नक्षत्र भवन की भाँति अत्यंत मनोहर लग रहा था। मनोरंजन के गृह में महाराजा उग्रगुप्त अपने दरबारी गायकों के साथ संगीत का गायन कर रहा था। महाराजा गान विद्या में स्वयं प्रवीण था। वह इंद्रजाल विद्या के साथ असंख्य विद्याओं में अनुपम कुशलता रखता था। मनोरंजन का भवन नगर प्रमुखों के साथ भरा हुआ था।

उस समय अचानक किसी के चिल्लाने की ध्वनि सुनाई दी। वही ध्वनि फिर एक बार सुनाई दी, तब राजमहल के सभी नौकर भयभीत हो उठे। सबने इसकी तहक़ीकात शुरू की। शीघ्र ही उन्हें मालूम हो गया कि वह ध्वनि किसकी है। उग्रगुप्त के इकलौते पुत्र राजकुमार नारायण के कमरे से वह ध्वनि आई थी। राजकुमार कमरे के एक कोने में दुबक कर

ए. सी. सरकार, जादूगर

बैठा था और वह अपने दायें हाथ को बायें हाथ से पकड़ कर भयभीत हो पीड़ा का अनुभव कर रहा था। राजकुमार सात साल का लड़का था। कोमल स्वभाव के राजकुमार को सभी दरबारी चाहते थे। उसकी धाई चकित हो विवर्ण मुंह लिए बाजू में खड़ी थी। राजा उग्रगुप्त ने धाई से बड़ी व्यग्रता पूर्वक पूछा–"क्या हुआ?" रानी ने झट अपने पुत्र को गोद में लिया।

धाई डरती हुई बोली–"राजकुमार ने अपनी उंगली जलाई है।"

"तुम क्या कर रही थी? राजकुमार का ख्याल क्यों नहीं रखा?" राजा ने क्रोध पूर्ण स्वर में पूछा।

"महाराज, मैं राजकुमार के साथ ही थी। खिड़की में से राजकुमार दीपमालिका की सजावट देख रहे थे, मैं उनके पीछे खड़ी थी। अचानक राजकुमार ने झट आग में उंगली रख दी और कहा–'धाई माँ! देखो न, यह नक्षत्र जैसे नहीं चमकता!' मोम बत्ती खिड़की के किनारे पर थी। मैं राजकुमार को रोकने ही वाली थी कि तभी राजकुमार की उंगली जल गई। तब राजकुमार उस कोने में छिपकर भय के मारे कांप रहे हैं। मुझे माफ़ कीजिए, महाराज!"

राजवैद्य ने आकर राजकुमार की जली हुई उंगली पर दवा लगाई। रानी ने राजकुमार को पुचकारा। उसके दर्द को भुलाने के लिए उसे खिड़की के पास ले गई और उसे नगर में शोभायमान दीपक दिखाने का प्रयत्न किया। राजकुमार का दर्द तो जाता रहा, लेकिन उसे भुलाना संभव न हो सका।

"पहले खिड़की में से उस क़मबख्त मोम बत्ती को निकालो, वरना मैं खिड़की के पास नहीं जाऊँगा।" राजकुमार रोते हुए बोला।

"बेटा, अब तुम्हारी उंगली नहीं जलेगी। तुम जाकर उस आग में अपनी

उंगली नहीं रखोने न?" रानी ने कोमल स्वर में पूछा।

"नहीं माँ, अब मैं मोम बत्ती की ओर बिलकुल न देखूंगा। सभी मोम बत्तियों को यहाँ से दूर फेंक दो। राजमहल में कहीं कोई मोम बत्ती न हो।" राजकुमार ने कहा।

"बेटा, मोम बत्ती न हो तो दीप न होंगे! दीप न हो तो अंधेरा फैल जाएगा न? क्या तुम हमेशा अंधेरे में ही रहोगे?" राजा उग्रगुप्त ने पूछा।

"मैं यह सब नहीं जानता। मेरे पास मोम बत्ती बिलकुल न हो। मैं उन्हें देखना नहीं चाहता।" यों कहते राजकुमार उत्तेजित हो उठा। क्रोध में आकर वह निकट की सारी चीज़ों को फेंक-फेंककर तोड़ने लगा।

तब प्रधान मंत्री ने उग्रगुप्त के समीप जाकर कहा–"महाराज, आचानक भयभीत होने की वजह से राजकुमार की नसों में तनावट पैदा हो गई है जिससे वह डर रहा है। मोम बत्तियों के प्रति राजकुमार के मन में भय और द्वेष पैदा हो गया है। अभी हम लोग इस डर को दूर न करे तो ज़िंदगी भर इसका दुष्परिणाम भोगना पड़ेगा। जलनेवाली मोम बत्तियों से राजकुमार का डर दूर करना है। कोई उपाय सोच लीजिए।"

उग्रगुप्त ने बहुत-कुछ सोचा-विचारा, मगर उसे कोई उपाय नहीं सूझा।

"महाराज, आप तो इंद्रजाल जानते हैं। उस विद्या का उपयोग क्यों नहीं करते?" राममोहन नामक एक दरबारी ने पूछा।

"राममोहन, तुमने बड़ी अच्छी सलाह दी। इंद्रजाल करके देखेंगे, उसका क्या असर होता है? शायद यह काम दे!" राजा उग्रगुप्त ने कहा।

राजा थोड़ी देर तक सोचता रहा, तब अपने पुत्र के पास जाकर बोला– "बेटा, तुमने जो कहा, बिलकुल सही है।

राजमहल से सभी मोम बत्तियों को निकाल कर दूर फेंकना है। एक राजमहल ही से क्या? हमारे राज्य भर में से मोम बत्तियों का बहिष्कार करना होगा। वे तो बड़ी खराब होती हैं। उन मोम बत्तियों ने हमारे मुन्ने की उंगली जलाई है। क्यों मंत्री जी, क्या कहते हो?" यों राजा ने मंत्री की ओर देख आँख का इशारा किया।

"महाराज, आप सच कहते हैं। हमारे राज्य में मोम बत्तियाँ रहनी नहीं चाहिए। वे बड़ी बुरी होती हैं।" मंत्री ने राजा का उद्देश्य भांप कर उनके कथन का समर्थन किया।

ये बातें सुनने पर राजकुमार की व्यथा कुछ हद तक जाती रही। उल्टे उसे इस बात का संतोष हुआ कि मोम बत्तियों को दण्ड दिया जा रहा है। इसके बाद राजा ने राजकुमार को अपनी गोद में लेकर समझाया—"बेटा, मैं राजा हूँ। राजा का कर्तव्य होता है कि सुनवाई किये बिना किसी को दण्ड नहीं देना चाहिए। इसलिए मोम बत्तियों के अपराध का फ़ैसला करना होगा। उस वक़्त यह भी देखना होगा कि कहीं उनमें कोई अच्छे गुण भी हो? अगर वे गुण तुम्हारा मनोरंजन करके तुम्हें खुश कर सके तो उन पर रहम की

जा सकती है। वरना हम उसे जरूर दण्ड देंगे। तुम क्या कहते हो?"

राजकुमार जवाब दिये बिना गंभीर हो मौन रह गया।

उग्रगुप्त ने अपने खज़ाने में से एक मोटी मोम बत्ती मंगवाई। उसके दूसरे छोर को भी पतला बनवा कर उसकी बत्ती बाहर निकलवाई और दोनों छोरों को जलने लायक़ बनाया। तब राजा ने दो ऊँचे कांच के लोटे मंगवाये। मोम बत्ती के मध्य भाग से एक लंबी सुई चुभो दी और उस सुई को दोनों लोटों पर टिकाया और मोम बत्ती को लोटों के बीच आड़े रख दिया। इसके बाद उसने बैठे

हुए बच्चों की आकृतियों को गत्तों में कटवाया, उन्हें उचित रंग लगवाये, तब गत्ते की उन गुड़ियों को आलपीनों से मोम बत्ती के दोनों तरफ इस तरह चुभो कर रखा जिससे मोम बत्तियों के छोर दिखाई न दे। लेकिन ऐसा करते वक़्त इस बात का ख्याल रखा गया कि मोम बत्ती को जलाने पर उसकी आग से गत्ते की गुडियाँ जल न उठे। तब राजा ने मोम बत्ती के दोनों छोर की बत्तियों को जलाकर अपने बेटे से कहा–"बेटा, सावधानी से देखो, यह मोम बत्ती तुम्हारा मनोरंजन करती है या नहीं?"

अजीब बात थी कि मोम बत्ती बोतल की तरह इधर-उधर हिलने लगी। उसके साथ गुड़ियाँ भी कभी एक ऊपर जाती तो एक नीचे आती, इस तरह झूलने लगीं। मोम बत्ती का छोर जल कर बूंदों के रूप में गिरने लगा, उधर बच्चों की गुड़ियाँ ऊपर-नीचे बराबर झूलने लगीं। देखने में वह दृश्य अत्यंत विचित्र, मनोरंजक और अद्भुत लग रहा था। उस दृश्य को देख राजकुमार तालियाँ बजाकर ज़ोर से हँस पड़ा। वह निकट जाकर उस नये खिलौने को छूकर बोला–"यह तो अद्भुत है।"

"बेटा, अब तुम क्या कहते हो? क्या इन सभी मोम बत्तियों को दूर फेंक दूं?" राजा ने राजकुमार से पूछा।

"पिताजी! सभी चीज़ों में अच्छाई-बुराई होती है। आगे में कभी मोम बत्ती की आग में अपनी उंगलियाँ नहीं जलाऊँगा। सावधान रहूँगा।" राजकुमार ने कहा।

राजा ने फ़ैसला सुनाने के जैसे स्वर में कहा–"हम फ़ैसला सुना रहे हैं–मोमबत्ती को हम निर्दोष मानते हैं। आइंदा मोम बत्तियाँ स्वेच्छा के साथ सभी घरों में जलते अंधकार को भगाते रहे!"

यह फ़ैसला सुनकर सबके साथ राजकुमार ने भी तालियाँ बजाकर अपनी खुशी प्रकट की।

भूख की दवा

एक देश में एक बार अकाल पड़ा। उस देश के राजा ने मंत्रियों तथा अन्य सरकारी अधिकारियों की सभा बुलाई और कहा—"हमारे देश में अकाल का तांडव हो रहा है। भूख की मौतें दिन ब दिन बढ़ती जा रही हैं। भूख को सदा के लिए भगाने के हेतु मैं वैद्यों के द्वारा एक ऐसी दवा तैयार कराऊँगा जिससे भविष्य में किसी को भूख ही न लगे।"

अधिकारियों तथा मंत्रियों ने राजा की बातें सुनीं, लेकिन सब लोग यह सोचकर मौन रह गये कि कोई सुझाव देने पर न मालूम राजा क्या सोच बैठेंगे।

लेकिन वृद्ध मंत्री सुबुद्धि ने उठकर निवेदन किया—"महाराज, हमारे देश के लिए अकाल कोई नया नहीं है। हर साल देश के किसी न किसी प्रदेश में अकाल पड़ ही रहा है। यदि उसे दूर करना हो तो सिंचाई की सुविधाएँ अधिक करके देश को सस्यश्यामल बनाना होगा। मगर भूख की दवा से अकाल को रोकना असंभव है।"

"मैं देखूँगा, क्यों संभव नहीं है?" राजा मंत्री पर बरस पड़ा।

इसके बाद राजा ने मंत्री की निंदा करते कहा कि मंत्री हर बात में अडंगा लगाना चाहता है, इस पर बाक़ी लोगों ने सुझाव देना बेकार समझा और राजा के कथन का मुक्त कंठ से समर्थन किया।

तब राजा ने देश के सभी वैद्यों को बुला भेजा और आदेश दिया—"तुम लोगों को मैं एक महीने की मोहलत देता हूँ। इस बीच भूख को मिटानेवाली दवा तैयार कर दो।"

वैद्य सब राजा की बात सुनकर चकित रह गये। उनमें से एक ने कहा—

घनश्याम सिंह

"महाराज, क्षमा कीजिए। भूख के पैदा होने से रोकनेवाली दवा का जिक्र किसी भी वैद्य ग्रन्थ में नहीं है।"

"तब...इन सभी वैद्यों को कारागार में बंद कर दो।" राजा ने आदेश दिया।

उस वक़्त एक बूढ़ा आगे आया और बोला–"महाराज, आप इन सभी वैद्यों को कारागार से मुक्त कराइए। मैं एक हफ़्ते के अन्दर भूख की दवा तैयार करके दे सकता हूँ।"

"हाँ, वैद्य हो तो ऐसा हो।" उस वैद्य की तारीफ़ करते राजा ने सभी वैद्यों को कारागार से मुक्त कराया।

इसके बाद चंद दिनों में वही बूढ़ा राजा के पास आया। ताड़ के फल के बराबर की दवा लाकर राजा के सामने रखा और कहा–"महाराज, हर एक आदमी घुंघुची के बराबर की दवा खा ले तो फिर उसे ज़िंदगी-भर में कभी भूख न लगेगी।"

राजा ने उस बूढ़े का सम्मान करके सारे नगर में दवा बंटवा दी। मगर राजमहल के निवासियों में से किसीने वह दवा नहीं खायी, इसलिए उन्हें पहले की भांति भूख लग रही थी। लेकिन शीघ्र ही यह समाचार मिला कि नगरवासियों में से किसी को भूख नहीं लग रही है।

तब वृद्ध मंत्री ने राजा के निकट पहुँच कर समझाया–"महाराज, लोगों ने काम-धाम करना छोड़ रखा है। उन्हें अब

भूख नहीं सताती, इसलिए सदा मनोरंजन और निद्रा में अपना वक़्त बिता रहे हैं।"

"लेकिन सबसे बड़ी भूख की समस्या हल हो गयी।" राजा ने कहा।

दो दिन बाद फिर मंत्री ने आकर राजा को समझाया—"महाराज, लोगों ने अब अपने-अपने पेशे करना छोड़ रखा है। जुलाहे कपड़े बुन नहीं रहे हैं, नाई दाढ़ी नहीं बना रहा है, लोगों की दाढ़ी-मूँछें बढ़ गयी हैं और वे जंगली आदमियों जैसे लग रहे हैं। सभी वस्तुओं का अकाल पड़ गया है। पहले केवल अनाज नहीं मिलता था, लेकिन अब बाज़ार में कोई भी चीज़ मिल नहीं रही है। अगर मिलती भी है तो उसके वज़न का सोना देकर ख़रीदना पड़ रहा है।" राजा ने ये बातें सुनीं, मगर कुछ नहीं कहा, मौन रहा।

थोड़े दिन बाद मंत्री ने आकर राजा से कहा—"महाराज, लोग क़ानून का भंग कर रहे हैं, विद्रोह मचा रहे हैं। सारे देश में अराजकता फैलती जा रही है।"

मंत्री की बातें सुनने पर राजा क्रोध में आकर बोला—"जनता ऐसी नामकहराम हो गयी है? सेनापति से कह दो कि वह सेना तैयार रखे।"

"महाराज, अब हमारे पास सेना ही कहाँ रही? सैनिकों में से बहुत से लोग हमारी नौकरी छोड़ चले गये हैं।" मंत्री ने जवाब दिया।

इतने में सेनापति घबराये हुए आ पहुँचा और बोला—"महाराज, हमारा शत्रु

चण्डप्रचंड अपनी सेना के साथ हमला करके आया और उसने हमारी राजधानी को भी घेर रखा है ।"

"अब क्या किया जाय? तुम्हीं बताओ?" राजा ने कहा ।

"सिवाय शत्रु के अधीन होने के हमारे सामने कोई उपाय नहीं रह गया है?" सेनापति ने ठण्डे दिल से कहा ।

सेनापति यों कह ही रहा था कि शत्रु सैनिक आ पहुँचे । उनका नेता राजा के निकट आकर बोला—"महाराज, आपका राज्य हमारे हाथों में आ गया है । आप अनावश्यक हमारा सामना करके अपने प्राणों को खतरे में न डाल लीजियेगा ।"

"अब सामना कैसा? भूख की दवा ने मुझे इस हालत में खड़ा कर दिया है । अब मैं आप लोगों का बंदी हूँ ।" यों कहते राजा आगे बढ़ने को हुआ ।

इतने में बूढ़ा वैद्य आगे आया और बोला—"महाराज, मैंने पहले ही बताया था कि भूख मिटाने की दवा सभी अनर्थों का मूल है । आप ने मेरी बात मान ली?"

"इसीलिए उसका फल भोग रहा हूँ ।" राजा ने कहा ।

"अब भी सही, आप ने असली बात समझ ली, हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है ।" इन शब्दों के साथ वैद्य ने अपना वेष बदल डाला । वह बूढ़ा वृद्ध और कोई न था, बल्कि मंत्री सुबुद्धि था ।

"महाराज, आप मुझे क्षमा करें । जैसे कहावत है कि मंत्रों के जपने से इमली के फल नीचे नहीं गिरते, वैसे ही दवा-दारू से भूख की समस्या हल नहीं होती । आपके द्वारा अच्छी योजनाएँ कार्यान्वित कराने के हेतु हमने यह स्वांग रचा है । दुश्मन के सभी सैनिक हमारे ही सैनिक थे । आप किसीके हाथ बन्दी नहीं हैं, देश की संपत्ति का समुचित उपयोग करने के लिए योजनाएँ तैयार कराइए और देश को सस्यश्यामल बना कर अकाल के भूत को भगाइए ।" मंत्री सुबुद्धि ने राजा को समझाया ।

वैतरणी

एक गरीब किसान के पास एक दुधारू गाय थी। उस गाँव के पुरोहित के मन में उस गाय को हड़पने की इच्छा पैदा हुई। इतने में किसान का पिता मर गया। कर्मकांड के समाप्त हो जाने पर पुरोहित ने किसान से कहा–"सुनो भाई, तुम्हारे पिता को उत्तम लोकों में जानेवाले रास्ते में वैतरणी नदी को पार करना होगा। उस नदी में भयंकर जलचर होते हैं। उस नदी को पार करने पर ही उत्तम लोकों की प्राप्ति होगी। तुम ब्राह्मण को एक दुधारू गाय दान दोगे तो उस गाय की पूँछ पकड़कर तुम्हारा पिता वैतरणी को पार कर सकता है।"

किसान ने अपनी दुधारू गाय को उस पुरोहित के हाथ दान दिया। पर उसे अपने पिता की मौत से ज़्यादा गाय के खोने पर दुख होने लगा।

आख़िर एक दिन वह पुरोहित के घर गया और बोला–"पुरोहितजी, मेरा एक संदेह है! क्या मेरे पिताजी वैतरणी को पार कर चुके होंगे?"

"कभी के पार कर चुके होंगे।" पुरोहित ने कहा।

"फिर उन्हें वापस नहीं भेजेंगे न?" किसान ने पूछा।

"एक बार जो वैतरणी को पार करते हैं, उनका फिर से लौटना नहीं होता।" पुरोहित ने जवाब दिया। "तब तो मैं अपनी गाय को अपने घर हाँक ले जाता हूँ।" यह कर किसान अपनी गाय को घर ले आया।
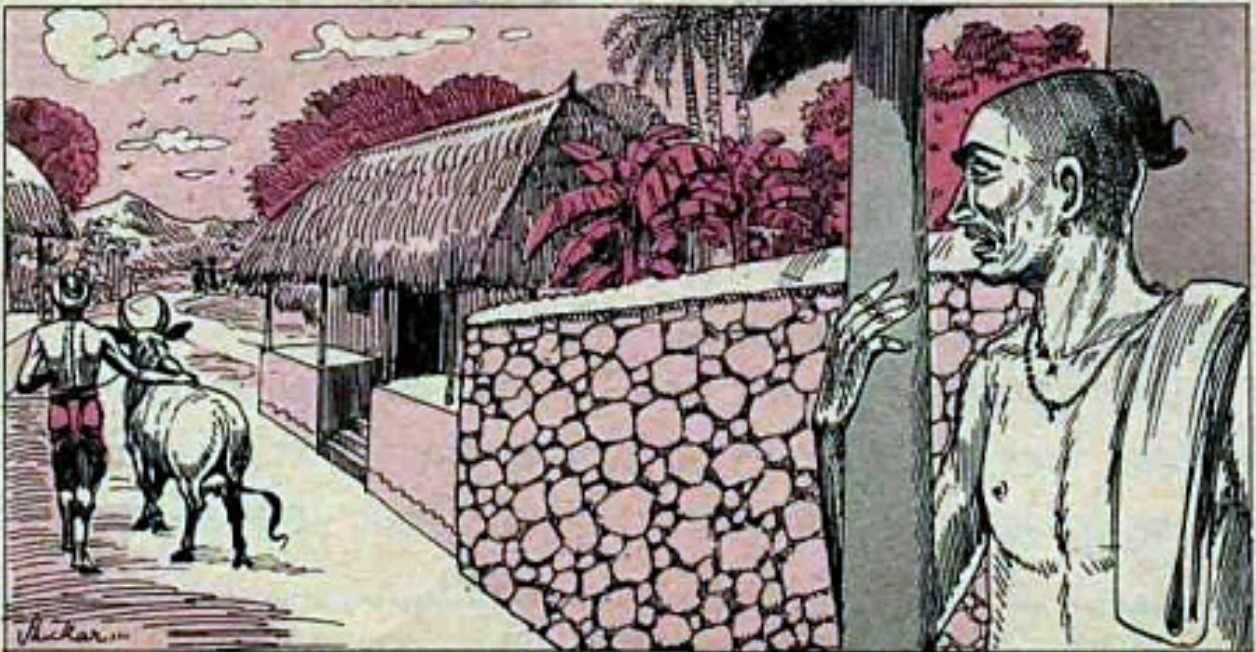
क़ाबिलियत

रामसुभग का इकलौता बेटा सोमसुंदर था। मगर रामसुभग का विश्वास था कि उसका लड़का किसी काम का नहीं, बल्कि आवारा है। इसलिए हर बात में वह अपने लड़के को आदेश देता, डर दिखाता। इस वजह से सोमसुंदर के व्यक्तित्व का विकास न हुआ। वह स्वतंत्र रूप से कुछ सोच व कर नहीं पाता था। अपने पिता की छाया में पला सोमसुंदर बड़ा होने पर भी एकदम बेकार निकला। ज्यों-ज्यों वह बढ़ता गया, त्यों-त्यों उसका दिमाग ख़राब होता गया। उसने खुद अदनी तरफ़ से एक ही विद्या सीख ली। वह यह कि वह तालाब में डूब कर सांस रोके बड़ी देर तक बैठा रह सकता था। इस कला में वह माहिर हो गया था। अगर उसका पिता कोई काम उसे सौंप देता तो वह कुछ का कुछ कर बैठता था।

रामसुभग के दिमाग में यह बात बैठ गयी कि अपने बेटे की शादी करने से शायद वह सुधर सकता है। उसकी यह भी उम्मीद थी कि पत्नी नहीं है, कम से कम बहू के आ जाने पर घर का काम संभाल लेगी। लेकिन गाँव के लोगों में से कोई भी सोमसुंदर के साथ अपनी लड़की ब्याहने को तैयार न था।

उन्हीं दिनों में पड़ोसी गाँव से एक रिश्ते की खबर मिली। रामसुभग ने अपने लड़के को लड़की देखने ले जाते हुए उसे समझाया—"बेटा, तुम लड़की के घर पहुँचते ही जूते निकाल कर किवाड़ के पीछे छोड़ दो ओर तब कुर्सी पर जा बैठो।"

मगर बात यह थी कि सोमसुंदर को उसका पिता जो भी कुछ कहता है, उससे उसका दिमाग उल्टे सोचने लगता है,

रामनिवास गुप्त

दिया और अपनी कमर में से तीन कौड़ी छुट्टे पैसे निकालकर उसे दे दिया।

बैरागी को मीनाक्षी के पैसे देते प्रभुगुप्त ने देख लिया। वह मीनाक्षी को डाँटते हुए बोला–"अरी, तुम सारा धन यहीं पर खर्चकर डालती हो! लौटती बार हमें भीख मांगनी पड़ेगी! समझीं!"

"बेचारे बैरागी सबेरे से आ बैठे हैं। खाना तो खिला नहीं पाये, तीन कौड़ी छुट्टे पैसे थे, तो दे दिया।" मीनाक्षी ने समझाया।

पुण्यतीर्थ पर पहुँचते ही दोनों ने तड़ाग में स्नान किया, मंदिर में जाते वक़्त प्रभुगुप्त ने मीनाक्षी के हाथ एक हज़ार रुपये देते समझाया–"मेरे पास एक हज़ार रुपये और हैं। एक हज़ार रुपये हम हुंडी में डाल देंगे, बाक़ी एक हज़ार हम अपने राह-खर्च के लिए रख लेंगे।"

"हाँ, हाँ, ऐसा ही करेंगे।" मीनाक्षी ने अपने पति की बातों का समर्थन किया।

भगवान के दर्शन करते समय मीनाक्षी ने अपने तन के गहनों के साथ अपने पति के दिये एक हज़ार रुपये भी हुंडी में डाल दिये। इसे देखे बिना प्रभुगुप्त ने एक हज़ार रुपये भी हुंडी में डाल दिये।

दोनों मंदिर से जब बाहर आये, तब प्रभुगुप्त ने मीनाक्षी से कहा–"रुपये

सावधानी से रखो। यहाँ पर सब चोर ही चोर फैले हुए हैं।"

"रुपये तो आपके पास हैं। मेरे पास जो थे, मैंने हुंडी में डाल दिये हैं।" मीनाक्षी ने आश्चर्य में आकर कहा।

उन्हें तुरंत गलती मालूम हो गई। प्रभुगुप्त ने मंदिर के अधिकारियों के द्वारा भूल से हुंडी में डाले एक हज़ार रुपये फिर से प्राप्त करने की बड़ी कोशिश की, लेकिन कोई फ़ायदा न रहा। इस पर मीनाक्षी ने प्रभुगुप्त से कहा–"आपने कोई अन्याय किया है। भगवान के हिसाब में गलत हिसाब तो नहीं किया है न?"

प्रभुगुप्त ने लज्जित हो अपना सिर झुका लिया। दोनों के पास जो छुट्टे पैसे बच रहें, वे एक दिन के खर्च के लिए पर्याप्त नहीं हुआ। घर लौटते वक़्त रास्ते में उपवास करते, मौक़ा मिलने पर याचना करते, काफ़ी तक़लीफ़ें झेलते घर पहुँचे। बहुत दिन बाद गाँव लौटे प्रभुगुप्त को देखने गाँव के कई लोग उसके घर आये। सबसे बड़ी आश्चर्य की बात यह थी कि उनके रवाना होते समय जो बैरागी दिखाई दिया था, वह तब भी वहीं था।

बैरागी ने आगे बढ़कर प्रभुगुप्त से पूछा—"आजी, आपकी यात्रा कुशलपूर्वक समाप्त हो गई है न?"

प्रभुगुप्त ने खीझकर कहा—"हाँ, हाँ! ठीक से चली है! रास्ते भर भीख माँगते लौट आये। ठीक है न?"

"यह बात तो आपने रवाना होने के पहले ही कह दी थी न? अच्छा, अब मैं चला।" यों कहते बैरागी चल पड़ा। "बैरागी ने अपनी सीमा से ज्यादा भलाई की, इसका उसे अच्छा पुरस्कार मिला!" एक औरत ने आलोचना की।

"याने, तुम्हारा मतलब मैं नहीं समझा!" प्रभुगुप्त ने कहा।

"बता दूँ? जब से तुम लोग तीर्थ पर गये हो, तब से वह बैरागी कुत्ते की तरह बेचारा तुम्हारे घर की रखवाली करता रहा। परसों रात को जब तुम्हारे घर में चोर सेंध लगाने जा रहे थे, तब बैरागी ने देख लिया, चिल्ला-चिल्लाकर सबको इकट्ठा किया। तब चोर भाग गये। वरना तुम्हारी सारी संपत्ति चोर लूट लेते। लेकिन तुम लोग उस बैरागी को चोर मानते हो।" औरत ने निंदा की।

"क़मबख़्त तीन कौड़ी के पुण्य ने हमारी सारी संपत्ति की रक्षा की है।" मीनाक्षी ने अपने पति की आँखों में देखते हुए कहा।

प्रभुगुप्त अपनी मूर्खता पर बहुत पछताया। उस दिन से वह दिल खोलकर दान देने लगा और अच्छा नाम भी कमाया।

तीन कौड़ी का पुण्य

एक गाँव में प्रभुगुप्त नामक एक व्यापारी था। वह धन पर अपनी जान देता था। उसकी पत्नी मीनाक्षी को अपने पति की यह कंजूसी बिलकुल अच्छी न लगती थी। लेकिन पुण्य कार्य करना चाहे, हठ करके अपने पति के हाथों से खर्च करवाती थी।

प्रभुगुप्त के पास भोगने के लिए धन का अभाव न था, पर संतान की कमी उन्हें खटकती थी। संतान पाने के वास्ते मीनाक्षी ने अनेक देवी-देवताओं की पूजा की, पुण्य कार्य किये, पर प्रभुगुप्त ने कभी कोई आपत्ति न की। मगर इससे कोई फ़ायदा न हुआ। आखिर मीनाक्षी ने थक कर यह मनौती की कि यदि उसे संतान होगी तो वह भगवान को अपने शरीर पर के सारे गहने दे देगी और साथ ही उसके पति को एक वर्ष के व्यापार में जो नफ़ा होगा, उसमें सौवाँ हिस्सा हुंडी में डाल देगी।

इस मनौती के कुछ ही दिन बाद मीनाक्षी गर्भवती हो गयी और समय पर उसने एक बच्चे का जन्म दिया। इसके बाद मीनाक्षी ने मनौती की यह बात अपने पति से बताई। प्रभुगुप्त मनौती की बात सुनते ही चौंक पड़ा और बोला– "तुम्हारा दिमाग खराब तो नहीं हो गया? बदन पर के सारे गहनों का मूल्य कम से कम दो-तीन हज़ार होगा। फ़ायदे में एक पैसे के हिस्सा का मतलब भी समझती हो! फिर कभी तुम यह बात मेरे सामने न उठाओ।"

मीनाक्षी अपने पति की धमकी सुन क्रुद्ध हो बोली–"इस बात में तुम ना नहीं कह सकते। यह मामला भगवान के साथ जुड़ा हुआ है। अगर बच्चे की कोई हानि

हुई तो तुम मेरी लाश देखोगे! खबरदार!" प्रभुगुप्त ने लाचार होकर अपनी पत्नी की बात मान ली। उसे इस बात का डर था कि भगवान क्रोधी है। मनौती पूरी न करने पर उसका नतीजा भोगना पड़ेगा। यह सोचकर उसने कहा—"इस बार मैं तुम्हारी मनौती पूरी करूँगा। लेकिन आइंदा फिर कभी धन देनेवाली मनौतियाँ मत किया करो।"

"क्या मैं नहीं जानती! फिर कभी ऐसा न होगा। मेरी बातों पर यक़ीन करो।" मीनाक्षी ने समझाया।

इसके कुछ दिन बाद प्रभुगुप्त अपनी पत्नी और बच्चे को लेकर भगवान की मनौती चुकाने चल पड़ा। मीनाक्षी ने मनौती के सारे गहने पहन लिये। प्रभुगुप्त ने यह निर्णय किया कि फ़ायदे में सौवाँ हिस्सा एक हज़ार रुपये बैठता है।

"हिसाब-क़िताब के मामले में भगवान को धोखा मत दो!" मीनाक्षी ने अपने पति को सावधान किया। तब राह-खर्च के निमित्त एक और हज़ार लेकर प्रभुगुप्त चल पड़ा। प्रभुगुप्त चलते वक़्त दर्वाजे पर जब ताला लगा रहा था, तब उसे बरामदे के चबूतरे पर आसान जमाया हुआ एक बैरागी दिखाई दिया।

"उफ! शकुन देखकर चलते वक्त इस बैरागी का मुंह देखना पड़ रहा है!" प्रभुगुप्त मन ही मन खीझ उठा।

बैरागी ने प्रभुगुप्त से कहा—"बाबू, पुण्यतीर्थों पर जाते समय दान-धर्म करके तब चलना चाहिए। रात से मैं कुछ खाया-पिया नहीं हूँ, कुछ तो मुझे दो।"

"अबे, तुम अपने उपदेश को रहने दो। तुम्हारे क़मबख्त तीन कौड़ी का पुण्य मुझे नहीं चाहिए। मैं हज़ारों रुपये दान करके भगवान से बहुत सारा पुण्य कमाने जा रहा हूँ।" प्रभुगुप्त ने जवाब दिया।

प्रभुगुप्त की बातें सुन उसकी पत्नी खीझ उठीं। आगे बढ़नेवाले अपने पति की आँख बचाकर थैली में से दो लड्डू निकालकर बैरागी की झोली में डाल

फिर भी सोमसुंदर ने इस तरह सिर हिलाया, जैसे वह अपने पिता की बात समझ गया हो। इसके बाद वह बार-बार अपने पिता की कही बातों को याद करते गाड़ी में जा बैठा। मगर रास्ते में वे बातें उल्टी हो गयीं।

कन्या के घर पहुँचते ही सोमसुंदर ने अपने जूते निकाल कर कुर्सी पर रख दिये और आप जाकर किवाड़ के पीछे बैठ गया। कन्या के पिता ने सोमसुंदर को देखते ही सारी बातें समझ लीं। उसने बाप-बेटे को अपनी कन्या को भी दिखाये बिना साफ़ कह दिया–"इस पागल के साथ मैं अपनी लड़की ब्याह नहीं सकता।"

घर लौटते ही सोमसुंदर पर खीझ कर बोला–"अब इस ज़िंदगी में तुम्हारी शादी न होगी। कोई ऐसा व्यक्ति तुम्हें अपनी लड़की दे सकता है, जो मानव मात्र न हो।"

सोमसुंदर ने निश्चय कर लिया कि ऐसा व्यक्ति को ढूँढ़ना चाहिए जो मनुष्य न हो। उसी रात को वह घर से चल पड़ा। तीन दिन तक यात्रा करके चौथे दिन की शाम को वह एक पहाड़ी प्रदेश पर पहुँचा। वहाँ पर एक गुफ़ा के भीतर से उसे विचित्र ध्वनि सुनाई दी। उस गुफ़ा में एक राक्षस सो रहा था। उसी का खुर्राटा सोमसुंदर को सुनाई दे रहा था।

सोमसुंदर ने गुफ़ा के भीतर जाकर राक्षस को देखा। वह मनुष्य जैसा नहीं लग रहा था। तब उसने सोचा–"मुझे कन्या देनेवाला यह आदमी मनुष्य नहीं। मेरे आने का समाचार जानकर डर के मारे यह यहाँ पर छिपा हुआ है।" यह सोचकर सोमसुंदर ने राक्षस की जटाएँ पकड़ कर खींचा।

राक्षस ज़ोर से जंभाइयाँ लेते हुए उठा और गरज कर बोला–"अरे, किसने मुझे जगाया है?"

"अबे, अपनी लड़की दिये बिना तुम कहाँ जाओगे? तुरंत भारी दहेज़ के साथ अपनी कन्या देकर मेरी शादी करो।"

यों कहते सोमसुंदर ने राक्षस का कान ऐंठ दिया।

राक्षस को बड़ा क्रोध आया। वह उस आवेश में सोमसुंदर को खा डालता, लेकिन इस बीच भीतरी गुफ़ा में रहनेवाली राक्षसी राक्षस और सोमसुंदर की बातें सुनकर वहाँ आ पहुँची। क्योंकि उसके एक लड़की है। वह भारी-भरकर शरीरवाली है। बड़ी कोशिश करने पर भी उसके लिए कोई रिश्ता तै न हो पाया था।

इसलिए राक्षसी वहाँ पर आते ही अपने मर्द पर नाराज़ हो कड़क कर बोली–"तुम भी कैसे राक्षस हो? दामाद खुद आये तो आदर-सत्कार तक नहीं करते?"

"मैं पूछना ही भूल गया, आखिर लड़की कहाँ?" यों कहते सोमसुंदर ने चोरों ओर अपनी नज़र दौड़ाई।

"अभी वह विहार करने गयी है। एक पहर बाद ही आयेगी। तुम थके-मांदे आये हो। थोड़ी देर सो जाओ।" राक्षसी ने कहा।

इसके बाद राक्षसी ने सोमसुंदर को फल और दूध दिया। सोमसुंदर भर पेट खा-पीकर भीतरी गुफ़ा में गया। जानवरों के चमड़ों पर लेट गया।

सोमसुंदर मोटा-ताजा और स्वस्थ था। राक्षस के मन में उसे खाने की इच्छा हुई। मगर राक्षसी भीतरी गुफ़ा के द्वार को रोके बैठी थी। आधी रात के क़रीब राक्षसी की

लड़की आ पहुँची। उसकी भारी आवाज़ सुनकर सोमसुंदर जाग पड़ा। उसने जागते ही माँ-बेटी की बातचीत सुनी।

"अरी, इतने दिन बाद तुम्हारा मर्द तुमको खोझते आया हुआ है।" राक्षसी ने अपनी लड़की से कहा।

"कहाँ पर हैं? दिखाओ तो सही?" यों कहते उस लड़की ने सोमसुंदरवाली गुफ़ा में झांककर देखा। सोमसुंदर ने अपनी आधी आँखें खोल कर राक्षस की कन्या को देखा और वह एकदम चौंक पड़ा। वह अपने माँ-बाप से भी कहीं ज्यादा विकृत और भयंकर है।

सोमसुंदर को देख राक्षसी कन्या ने कहा—"माँ, यह तो मक्खन जैसा है।"

"क्या उसको तुम कहीं खा डालेगी? बेटी, ऐसा काम मत करो। उसको छोड़ तुम्हें कोई दूसरा मर्द नहीं मिलेगा।" माँ राक्षसी ने अपनी बेटी को चेतावनी दी।

"मेरी बात रहने दो, लेकिन बाप क्या इसको यूँ ही छोड़ देंगे? आदमी मिल जाता है, तो खाये बिना वे छोड़ देंगे?" लड़की ने शंका प्रकट की।

"इसीलिए मैं बाहर तक गये बिना पहरा दे रही हूँ। मैं थोड़ी देर वैसे घूम आती हूँ, तुम पहरा दो।" यों कहकर बड़ी राक्षसी बाहर चली गई।

राक्षसी कन्या ज्यों-ज्यों सोमसुंदर को देखती गयी, त्यों-त्यों उसके मन में उसे खाने की इच्छा बढ़ती गई। गुफ़ा में भी

खा लेगी तो उसकी माँ उसे जान से छोड़ेगी नहीं, इसलिए छोटी राक्षसी ने सोमसुंदर को जगाया और कहा–"चलो, शादी का सारा इंतज़ाम हो चुका है।"

सारी बातें सोमसुंदर सुन चुका था। उसे मालूम हो गया कि वह कोई चाल रही है।

"पहले दहेज़ की रक़म यहाँ पर रख दो; तभी शादी होगी।" सोमसुंदर ने कहा।

राक्षसी कन्या गुफ़ा के भीतर चली गई। एक चमड़े की थैली में हीरे-जवाहरात और सोना भरकर ले आयी, सोमसुंदर के हाथ देकर बोली–"अब तो चलो।" सोमसुंदर ने थैली का मुंह रस्सी से बाँध दिया। बगल में दबाये राक्षसी कन्या के पीछे चल पड़ा।

गुफा पार कर बाहर आते ही सोमसुंदर ने राक्षसी कन्या से कहा–"स्नान किये बिना शादी कैसी? पहले मुझे नहाना है।"

राक्षसी कन्या सोमसुंदर को तालाब के पास ले गई। तब वह थैली के साथ तालाब में कूद कर पानी के भीतर बैठ गया।

राक्षसी कन्या बड़ी देर तक इंतज़ार करती रही, पर सोमसुंदर बाहर न आया। वह पानी से बहुत डरती है, इसलिए वह यह सोचकर अपनी गुफा को लौट आयी कि दूसरे दिन वह मर कर पानी पर तिर जाएगा, तब आकर खाया जा सकता है।

बड़ी देर बाद सोमसुंदर ने पानी में से अपना सिर बाहर निकाल कर देखा, जब उसे यह विश्वास हो गया कि राक्षसी कन्या लौट गई है, तब वह थैली के साथ अपने घर पहुँचा।

धन के साथ लौटे सोमसुंदर के लिए एक अच्छा रिश्ता पक्का हो गया। तब रामसुभग ने जान लिया कि उसका कड़ा नियंत्रण न हो, तो उसका लड़का पागल नहीं होता। इसके बाद सोमसुंदर को यह साबित करने के लिए कि वह भी एक क़ाबिल आदमी है, ज्यादा दिन न लगे।

पछतावा

एक चोर एक किसान के घर से एक मोटी-ताजी बकरी को चुराकर अपने घर ले आया। उसे देखते ही चोर की औरत बड़ी खुश हुई और बोली–"तीन-चार दिनों में हाट लगनेवाली है, तब इसे बेच देंगे, तब तक हम इसके दूध पियेंगे।"

हाट के दिन चोर मुंह-अंधेरे उठा, बकरी को ले हाट की ओर चल पड़ा। अभी तक सवेरा न हुआ था। रास्ते में एक पेड़ के नीचे एक आदमी सो रहा था। उस आदमी के दुपट्टे के छोर में कोई चीज़ बंधी दिखाई दी, चोर ने बड़ी ख़ूबी से दुपट्टे की गांठ खोलकर देखा तो एक सोने की अंगूठी हाथ लगी।

चोर ने बकरी को वहीं पर छोड़ दिया। उस अंगूठी को कहीं जल्दी बेचने के ख़्याल से चल पड़ा। उसे अपने गाँव के गहनों के व्यापारी के हाथ बेचा जा सकता है, मगर वह यह शक कर सकता है कि इस आदमी के पास सोने की अंगूठी कहाँ से आयी? इसलिए चोर निकट के गाँव में गया, वहाँ के जौहरी के हाथ उसे बेचना चाहा।

जौहरी ने उसे देखते ही समझ लिया कि वह अंगूठी वही है जिसे जमींदार के हाथ उसने बेच डाली थी। उसने उसी समय जमींदार के पास खबर भेजी और चोर के साथ मोल-भाव करने लगा।

महेन्द्रकुमार ठाकर

जमींदार यह सोचकर खुश हुआ कि उसकी खोई हुई अंगूठी मिल गयी है तब अपने नौकरों को जौहरी के पास भेजा । नौकरों ने आकर चोर की कैफियत पर ध्यान दिये बिना उसे खूब मार-पीटकर भेज दिया ।

इस बीच पेड़ के नीचे सोनेवाला आदमी जाग पड़ा । उसे मालूम हुआ कि उसकी अंगूठी खो गई है, अंगूठी के मिलने की खुशी में वह घोड़े बेचकर सो गया था । मगर उस अंगूठी के खो जाने पर उसे रोना आया ।

इतने में समीप में बकरी की चिल्लाहट सुनाई दी । चोरों ओर देखा, कोई आदमी दिखाई न दिया । इसलिए वह उस बकरी को लेकर सीधे हाट की ओर चल पड़ा । उसका विचार था कि बकरी को बेचने पर कम से कम थोड़े रुपये हाथ लगेंगे । वह उस बकरी को लेकर एक किसान के घर से गुज़र रहा था तब उस घर के मालिक ने बकरी को देख पहचान लिया कि वह बकरी उसी की है । अलावा इसके वह बकरी उस घर को देखते ही ज़ोर से मिमियाने लगी थी ।

किसान ने गाँव के लोगों की मदद से चोर को पकड़ लिया । गाँववाले जानते थे कि वह बकरी उसी किसान की है, इसलिए सबने मिलकर चोर की खूब मरम्मत की ।

इस तरह वे दोनों चोर एक के अपराध के लिए दूसरे सज़ा भोगकर पछताने लगे ।

गुप्त भेद

एक देश का युवराज अपनी हर शंका के लिए मंत्री से सलाह लिया करता था। एक दिन वह मंत्री के साथ टहल रहा था, तब उसने मंत्री से पूछा–" हर छोटी-सी बात को लेकर आप और मेरे पिताजी गुप्त रूप से क्यों बात करते हैं ?"

" यह बात मैं तुम्हें कभी ज़रूर बताऊँगा।" मंत्री ने उत्तर दिया।

दूसरे दिन फिर वे दोनों टहलने गये। उस वक्त मंत्री ने युवराज से ऊँचे स्वर में इस तरह कहा जिससे उनके पीछे चलनेवाले सेवक सुन सकें–"आज हमारे सैनिकों ने हमारे पड़ोसी राजा ब्रह्मदत्त के दो गुप्तचरों को बंदी बनाया है।"

सेवकों ने उस रात को अपने घर जाकर अपनी अपनी औरतों से ब्रह्मदत्त के गुप्तचरों के पकड़े जाने का समाचार विभिन्न रूप से बढ़ा-चढ़ा कर सुनाया। एक ने बताया कि शत्रु के गुप्तचर राजमहल में पकड़े गये हैं। दूसरे ने कहा, इसके बारे में राजा तथा मंत्री ने गहरी चर्चा की है, तीसरे ने कहा–" ब्रह्मदत्त की सेनाएँ राज्य की सीमा पर हमला करने को तैयार हैं, चौथे ने कहा कि किसी भी समय युद्ध छिड़ सकता है।

दूसरे दिन सारे नगर में ये अफ़वाहें फैल गयीं कि युद्ध होनेवाला है, सेनाएँ युद्धभूमि की ओर बढ़ रही हैं। सारे नगर में कोलाहल मच गया। सब लोगों ने चीज़ों का संग्रह करना शुरू किया। व्यापारियों ने वस्तुओं के भाव बढ़ाये। आख़िर राजा के द्वारा यह ढ़िढ़ोरा पिटवाने पर कि युद्ध नहीं हो रहा है, तब जाकर नगर की हालत पहले की सी हो गई। तब मंत्री ने युवराज से कहा–" देखा है न, युवराज ! कैसे एक छोटे से गुप्त भेद को लेकर नगर में कैसी हलचल मच गई है ?"

भाग्य का खेल

रामापुर में गोपालचार्य नामक एक गुरु था जो अपने चबूतरे पर ही शिष्यों को बिठला कर पढ़ाया करता था। वही उसकी पाठशाला थी। गोपालचार्य का बड़ा नाम था। लोग दूर दूर के गाँवों से भी आकर उसके यहाँ शिक्षा पाते थे। एक दिन उसने बातों के सिलसिले में अपने शिष्यों से कहा–"यदि हम एक लोटा लेकर चाहे नदी के पास जावें या कुएँ के पास, हमें तो लोटे भर ही पानी मिलता है। वही हमारी क़िस्मत में लिखा होता है। इसी तरह हम चाहे सोने के पहाड़ के पास जावे या श्मशान में जावे, हमारे भाग्य में जो लिखा होता है, वही हमें मिलता है।"

ये बातें गोपालचार्य के दिमाग में कहाँ तक बैठ गईं, हम कह नहीं सकते, मगर उस वक़्त पंडितजी के घर से गुजरनेवाले शिवराम के दिमाग में यह बात पक्की बनकर बैठ गई।

शिवराम उस गाँव के पुजारी का लड़का था। पच्चीस साल से ज़्यादा उम्र का हो जाने पर भी दुनियादारी का ज्ञान या अपने निजी कार्य स्वयं करने की सूझ-बूझ भी वह प्राप्त नहीं कर पाया था। उसके पिता ने कई बार उसे समझाया था–"बेटा, मंदिर में आकर बैठ जाओ, शायद तुम्हें पूजा करने का तरीक़ा मालूम हो जाय! इससे तुम अपनी जीविका कमा सकते हो। वरना तुम्हें भूखों मरना पड़ेगा। आज के ज़माने में कोई किसीकी मदद नहीं करता। मेरी बात मान लो।" मगर शिवराम ने अपने पिता की बातों की परवाह नहीं की। घर के लोगों की दृष्टि में वह एक मनुष्य तक माना नहीं जाता था।

गोविन्दलाल पटेल

शिवराम घर छोड़कर कहीं चला जाना चाहता था, इसी विचार से वह अपने घर से निकल पड़ा था, तभी गोपालाचार्य की बातों से उसके दिमाग में कोई विचार पैदा हो गया। वह यह नहीं जानता था कि सोने का पहाड़ कहाँ पर है, या वास्तव में है कि नहीं। मगर गाँव की उत्तरी दिशा में श्मशान जरूर था। जिसे उसने देखा भी था।

उस रात को शिवराम भरपेट खाकर श्मशान में चला गया। अंधेरे में जहाँ-तहाँ क़ब्रें विकृत दिखाई दे रही थीं। दो जगह अभी तक लाशें जल भी रही थीं। श्मशान के बीच एक मण्डप था। वह अपने भाग्य को अजमाने के ख़्याल से मण्डप में गया और आँखें बंद कर विचारों में खो गया कि क्या करना चाहिए। वह सोचते-सोचते सो गया।

आधी रात के क़रीब सोनेवाले शिवराम को लगा कि कोई उसके वस्त्र पकड़ कर खींच रहा है और उसकी करवटें बदल रहा है, मगर वह गहरी नींद सोनेवाला था, इस कारण उसने आँखें तक न खोलीं। वह नींद को खराब होने न देना चाहता था, इसलिए वह रात-भर सोता ही रहा, सुबह जब उसकी आँखों पर सूरज की किरणें पड़ीं तब वह उठ बैठा। उसने देखा कि उसके आगे दो सोने के टुकड़े पड़े हुए हैं। उसने यह सोचकर उन्हें ले जाकर अपने पिता के हाथ दिया कि उसके भाग्य में यही लिखा है। उन्हें देख पुजारी आश्चर्य में आ गया।

उस सोने के खर्च होने तक शिवराज पहले जैसे आवारागर्दी करता रहा। इसके बाद वह फिर एक बार श्मशान में गया और वहाँ पर लेट गया। इस बार नींद में उसे लगा कि कोई उसे कंटीले रास्तों तथा चिताओं के बीच से ले जा रहा है, फिर भी उनने कोई परवाह न की और न वह नींद से जागा। सवेरे उठ कर देखा, इस बार भी उसके सामने सोने के दो टुकड़े

पड़े हुए थे। वह खुशी से उन टुकड़ों को लेकर घर पहुँचा।

यह बात धीरे-धीरे गोपालाचार्य के कानों में पड़ी। उसे यह भी मालूम हो गया कि शिवराम को सोना मिलने का कारण उसके उपदेश ही हैं। उसने कभी कल्पना तक न की थी कि उसके उपदेश सुनकर कोई व्यक्ति ऐसा लाभ भी उठा सकता है।

उसने शिवराम को बुला भेजा और पूछा—"बेटा, क्या यह तुम्हारे लिए उचित है? मेरे उपदेश सुनकर तुम अकेले को ही सोना प्राप्त कर लेना कहाँ का न्याय है?"

"आप ठीक कहते हैं, यह न्याय नहीं है। मैं अभी आपका हिस्सा ले आता हूँ।" यों कहते शिवराम उठने को हुआ।

"नहीं, नहीं, मुझे जरूरत नहीं। मुझे सिर्फ़ वह जगह दिखाओ जहाँ श्मशान में तुम लेटते हो।" गोपालचार्य ने पूछा।

उस दिन रात को शिवराम ने गोपालाचार्य को श्मशान में ले जाकर उसके लेटने की जगह दिखाई। उस रात को गोपालाचार्य श्मशान में सो गया। नींद में उसे लगा कि कोई उसके कपड़े पकड़ कर खींच रहा है। झट वह नींद से जाग कर उठ बैठा। कहीं से राख उड़ कर आ गयी और उसकी आँखों में पड़ गयी। तब से उसे सारी रात नींद न आई। सवेरा होने पर उसे सोने के टुकड़े भी दिखाई नहीं दिये।

फिर भी वह दूसरी रात को भी श्मशान में जाकर सो गया। इस बार नींद में उसे लगा कि कोई उसे कांटों और लपटों के बीच हाथ पकड़ कर आगे ले जा रहा है। वह डर गया। उसने आँखें खोल कर देखा। होश में आने पर उसे मालूम हुआ कि वह सचमुच चिता के बीच खड़ा हुआ है। तभी उसके शरीर का जलना भी शुरू हो गया था। वह अंधाधुंध दौड़ते कांटों से चिर कर खून टपकाते शरीर को लेकर घर आ पहुँचा। शायद उसके भाग्य में यही लिखा हुआ था।
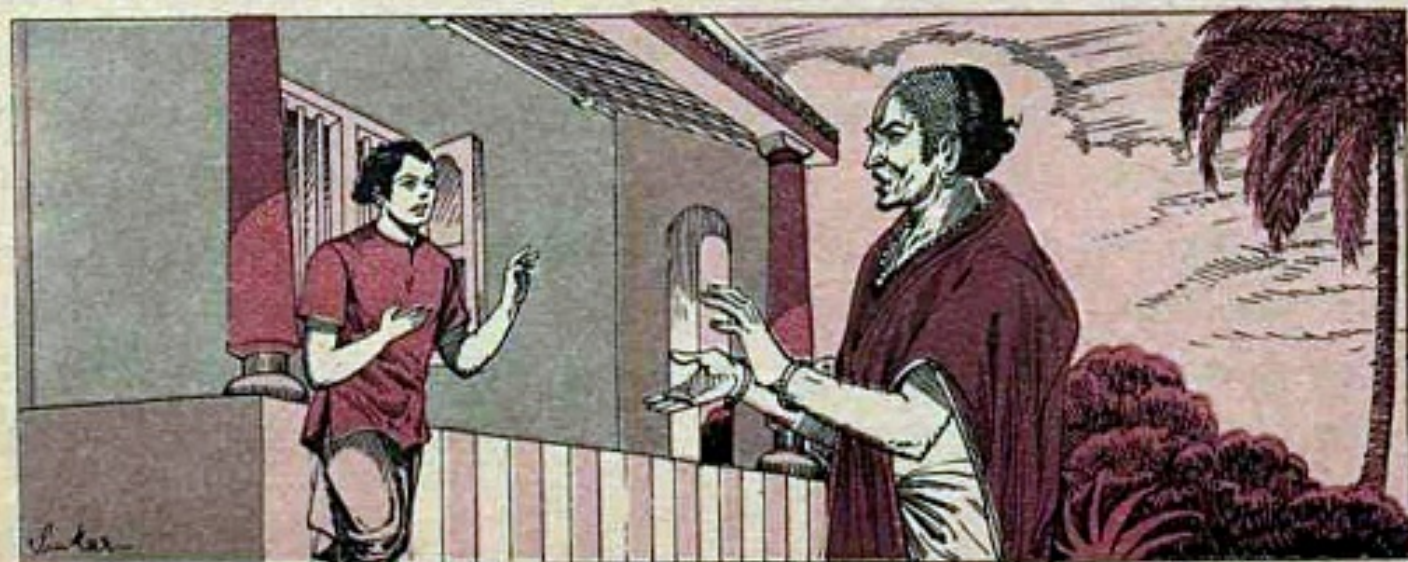
युद्ध के समाप्त हो जाने के बाद पांडव गंगा के तट पर पहुंचे। अपने मृत रिश्तेदारों के लिए तिलोदक और दश दान करने के बाद महीने भर शोक मनाया, धृतराष्ट्र, विदुर तथा नारियों के साथ नगर के बाहर एक पर्णकुटी में बिताया।

इसके उपरांत युधिष्ठिर को देखने व्यास आदि मुनि, उनके शिष्य, ब्राह्मण और गृहस्थ भी आये। युधिष्ठिर ने उन सब का यथोचित अतिथि-सत्कार किया। उन्हें उचित स्थानों पर बिठाकर वह भी बैठ गया।

तब युधिष्ठिर ने उन लोगों से कहा–"कृष्ण, भीम, अर्जुन आदि ने मुझे विजय पहुँचायी है, लेकिन मुझे यह विजय प्रतीत नहीं होती। मैंने अपने ज्ञातियों का वध किया है, अभिमन्यु तथा द्रौपदी के पुत्रों को खो दिया है। ऐसी हालत में राज्य का यह भोग मुझे कैसे सुख पहुँचा सकता है? इसके अलावा तिलोदक के समय मेरी माता ने यह रहस्य प्रकट किया कि महान दाता और महा वीर कर्ण मेरे भाई हैं, मैं समझ नहीं पाता कि ऐसे महारथी का देहांत क्यों हो गया है?"

ये बातें सुनने पर नारद ने कर्ण के शापों का परिचय युधिष्ठिर को कराया।

कर्ण जिस वक़्त द्रोण के यहाँ धनुर्विद्या सीख रहा था, उस वक़्त वह अर्जुन की धनुर्विद्या को देख ईर्ष्या करता था। इसी प्रकार उसे युधिष्ठिर की बुद्धिमत्ता,

६०. चार्वाक का वध

भीम का बाहुबल, नकुल और सहदेव का सौजन्य तथा कृष्णार्जुनों की मैत्री के प्रति ईर्ष्या का भाव था। इसी कारण उसने दुर्योधन की मैत्री प्राप्त की।

द्रोण के यहाँ धनुर्विद्या सीखते समय ही कर्ण एक दिन गुप्तरूप से द्रोण के पास जाकर बोला–"गुरूजी, आप के मन में अपने शिष्यों के प्रति कोई पक्षपात नहीं है न? युद्ध में अर्जुन को जीतने की मेरी तीव्र इच्छा है। मुझे ब्रह्मास्त्र के प्रयोग तथा वापसी की विद्या का उपदेश दीजिए।"

द्रोणाचार्य अर्जुन का पक्षपाती था। इसलिए उसने कर्ण से कहा–"तुम सूत पुत्र हो! ब्रह्मास्त्र ब्राह्मण और क्षत्रियों को छोड़ अन्यों को दिया नहीं जा सकता है।"

यह बात सुनने पर कर्ण महेन्द्रगिरि के समीप तपस्या करनेवाले परशुराम के पास गया, उसे साष्टांग प्रणाम करके बोला–"महात्मा, मैं भृगुवंशी ब्राह्मण हूँ। मुझे आप अपने शिष्य के रूप में ग्रहण कीजिए।" इस पर परशुराम ने मान लिया। परशुराम ने कर्ण को अनेक अस्त्र-शस्त्रों के प्रयोग तथा उनकी वापसी की विद्याएँ सिखाईं। उस प्रदेश के यक्ष और गंधर्वों के साथ मैत्री पूर्वक व्यवहार करते कर्ण अपनी अस्त्र-विद्याओं के द्वारा उन्हें भी चकित किया करता था।

उन्हीं दिनों में एक बार कर्ण अपने गुरु के आश्रम के समीप समुद्र तट पर धनुष और बाण लेकर घूम रहा था, वहाँ पर उसने एक गाय को देख अपने बाण से उसे मार डाला। बाद को कर्ण को मालूम हुआ कि वह गाय एक ब्राह्मण की होमधेनु है। तुरंत उस ब्राह्मण के पास जाकर कर्ण ने क्षमा माँगी, पर वह ब्राह्मण शांत न हुआ, उसने शाप दिया–"तुम जब युद्ध-भूमि में युद्ध करते रहोगे, तब तुम्हारे रथ का एक पहिया जमीन में धंस जाएगा, तब तुम शत्रु के हाथों में मेरी गाय की तरह मारे जाओगे।"

इसके बाद कर्ण ने परशुराम को अपनी निरंतर सेवाओं तथा विद्या के कौशल द्वारा प्रसन्न किया और उसके यहाँ सारा धनुर्वेद सीख कर ब्रह्मास्त्र का उपदेश भी प्राप्त किया। लेकिन उन्हीं दिनों में एक घटना घटी। परशुराम कर्ण की जांघ पर सिर रखे सो रहा था। उस वक़्त कोई कीड़ा कर्ण की जांघ में छेद बनाने लगा। कर्ण ज़बर्दस्ती उस पीड़ा को सहते अपने गुरु की निद्रा में भंग न हो, इस ख़्याल से वह अविचल बैठा रहा। वहाँ पर खून बहने लगा।

थोड़ी देर बाद परशुराम उठ बैठा, वहाँ पर खून तथा परशुराम की जांघ में छेद बनाने वाले कीड़े को देख बोला— "अरे, सुनो, ब्राह्मण में ऐसी सहनशीलता नहीं हो सकती! तुम सच सच बताओ, कौन हो?"

कर्ण यह सोच कर डर गया कि सच न बताने पर परशुराम उसे शाप देगा। इसलिए उसने कहा कि वह सूतवंशी है। इस पर परशुराम ने उसे शाप दिया कि युद्ध के समय कर्ण को ब्रह्मास्त्र का स्मरण न रहे।

इतने सारे शापों का शिकार होकर भी कर्ण महान योद्धा कहलाया। कलिंग देश के राजपुर के राजा चित्रांगद की पुत्री के स्वयंवर के समय दुर्योधन उसे ज़बर्दस्ती उठा ले जा रहा था, तब अनेक राजा उस पर हमला कर बैठे, फिर भी कर्ण ने दुर्योधन को विजय दिलाई।

एक बार कर्ण ने अजेय जरासंध को हराया और उससे मालिनी नामक एक बड़े नगर को उपहार के रूप में ग्रहण किया। उसके पराक्रम को देख चकित हो इंद्र ने अर्जुन के वास्ते कवच और कुण्डल दान में ले लिया। युद्ध में कर्ण की मृत्यु के लिए ये सब कारण बने।

नारद के द्वारा युधिष्ठिर ने कर्ण की सारी बातें जान लीं. उन सब का स्मरण करके बताया—"माता-पिता अपनी संतान

के वास्ते असंख्य यातनाएँ झेलते हैं। उनके मुख के वास्ते ही माताएँ नौ महीने गर्भ धारण कर प्रसव पीड़ा का अनुभव करती हैं। सुख-भोगों से वंचित हो कितने युवक इस युद्ध में बुरी मौत मरे। क्षत्रिय धर्म को धिक्कार है! राज्य के वास्ते मैंने कैसा पाप किया है! मुझे यह राज्य नहीं चाहिए! अर्जुन, तुम्हीं इस पर शासन करो। मैं जप-तप और तीर्थ यात्राएँ करूँगा।"

ये बातें सुन अर्जुन ने अपमान और क्रोध का भी अनुभव किया। उसने युधिठिर से कहा-"महाराज, हमने अपने राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिए क्षत्रिय धर्म का अवलंबन किया है। राज्य प्राप्त होने के बाद भीख माँगने की बात सोचना असंगत मालूम होता है। यदि भीख ही माँगनी थी, तो इतने सारे लोगों का वध क्यों करना चाहिए था? इस वक़्त यदि आप भीख माँगना चाहे तो क्या सब लोग आप को देख हँस नहीं पड़ेंगे? नहुष ने बताया था कि दारिद्रय की कामना कभी नहीं करनी चाहिए। समस्त धर्मों का मूल धन है। इसलिए आप राज्य को ग्रहण कीजिए। अश्वमेध यज्ञ करके समस्त पापों से मुक्त हो जाइए।"

भीम ने अर्जुन का समर्थन करते हुए कहा-"राजधर्म की निंदा करने में क्या मतलब है? शत्रु का वध करने में दया कैसी? हिंसा क्या है? प्रयत्न पूर्वक दुर्योधन आदि का वध क्या भीख माँगने के लिए किया गया था? यह बात अगर हमें पहले मालूम हो जाती तो क्या हम आयुध धारण करते? इतने सारे लोगों का वध करते? हम भी यथाशक्ति भीख माँगते! आप ऐसी बातें करते हैं, जैसे कुआँ खोदने के बाद उसमें से पानी लेना नहीं चाहते। अब आप को दोष देने की जरूरत नहीं। गलती तो हमारी है, आप की बात मान कर बलवान होते हुए भी हमने निर्बलों जैसा व्यवहार किया। अब इन सारी बातों को छोड़कर राज्य का शासन कीजिए।"

संपादन के लिए क्या और कोई मार्ग है? आप ऐसी ही बातें करेंगे तो लोग कहेंगे कि 'युधिष्ठिर मतिभ्रष्ट हो गये हैं।' राज्य का शासन करना गलत नहीं है। अंबरीष, मांधाता जैसे महानुभावों ने राज्य किये हैं।"

इसके बाद अनेक ऋषियों ने युधिष्ठिर को हितोपदेश किया। महर्षि व्यास ने युधिष्ठिर से कहा–"यदि हमारा वध करने कोई वेद-वेदांगों का पारंगत भी आता है तो उसका वध किया जा सकता है। इस से हम ब्रह्महत्या के दोष के भागी न होंगे।"

नकुल और सहदेव ने भी इसी प्रकार युधिष्ठिर को चेतावनी दी।

अंत में द्रौपदी ने यों समझाया:

"आप अपने भाइयों के कहे अनुसार कीजिए। वनवास के समय जब वे लोग असहनीय कष्ट झेल रहे थे, तब आप ने उन्हें सांत्वना दी थी–ये कष्ट सदा के लिए नहीं रहेंगे, शीघ्र ही दुर्योधन को पराजित कर अपने राज्य को प्राप्त कर लेंगे, अब फिर एक बार उन बातों का स्मरण कीजिए। अब आप जो बातें कह रहे हैं, उन से ये हतोत्साहित हो रहे हैं। क्या आप ने बहुत समय पूर्व अनेक राज्य युद्ध करके ही जीत नहीं लिये थे? राज्य

अपने भाइयों के साथ महर्षि व्यास और कृष्ण के भी समझाने पर युधिष्ठिर अपने संदेह और चिंता को त्याग कर राज्य करने के लिए तैयार हो गया।

युधिष्ठिर के वास्ते रथ तैयार हो गया। उसमें सोलह सफ़ेद बैल जुते गये। सफ़ेद स्तम्भ जोड़े गये। रस्से पकड़कर भीम सारथी के स्थान पर बैठ गया। अर्जुन ने युधिष्ठिर के वास्ते सफ़ेद छत्र पकड़ा। नकुल और सहदेव ने उनके लिए चामर धारण किये। युधिष्ठिर के रथ के पीछे युयुत्स का रथ चल पड़ा। उसके पीछे कृष्ण और सात्यकी दो घोड़ों से जुते रथ पर चले। इस जुलूस के आगे गांधारी

धृतराष्ट्र, कौरव नारियाँ, कुंती, द्रौपदी अलग अलग वाहनों में विदुर के साथ निकले। उनके पीछे चतुरंगी सेना चल पड़ी। बंदी जनों के स्तोत्र-पाठों के बीच युधिष्ठिर हस्तिनापुर पहुँचे। सारा नगर सुंदर ढंग से सजाया गया था। सर्वत्र सफ़ेद पुष्पों के तोरण और सफ़ेद झंड़ियाँ सजायी गयीं थीं।

वैभवपूर्वक जब युधिष्ठिर नगर का प्रवेश करने लगा, तब हज़ारों नागरिक और नारियाँ उन्हें देखने आये। मार्गों पर खड़े हो अपना हर्ष व्यक्त करने लगे। मंत्री तथा अन्य प्रमुख व्यक्तियों ने आकर कहा–"राजेन्द्र! हमारे सौभाग्य से आपने शत्रु को पराजित कर, धर्मपूर्वक पुनः राज्य प्राप्त किया।" ब्राह्मणों ने युधिष्ठिर को आशीर्वाद दिया।

युधिष्ठिर ने राजमहल में प्रवेश करके धौम्य तथा धृतराष्ट्र को प्रणाम किया और देवताओं की आराधना की। इतने में बड़ा कोलाहल पैदा हुआ। दुर्योधन का मित्र चार्वाक युधिष्ठिर के निकट आकर बोला–"ज्ञातियों का वध करके तुम क्या भोगने जा रहे हो? तुम इस तरह की निकृष्ट ज़िंदगी न जिओगे तो क्या होगा?"

यह बात सुनकर युधिष्ठिर शर्मिंदा हुआ और ब्राह्मणों की ओर मुड़ कर बोला–

"मुझ पर अनुग्रह कीजिए! मैं पहले से ही चिंता में डूबा हुआ हूँ। मेरी निंदा न कीजिए।"

इस पर ब्राह्मणों ने कहा–"राजन, चार्वाक का यह विचार हमारा विचार नहीं है। यह दुर्योधन का मित्र है। इसीलिए ऐसी बातें बकता है। आप को और आप के भाइयों को किसी भी प्रकार का अशुभ न होगा।" यों कहकर उसी वक़्त सब ब्राह्मणों ने मिलकर चार्वाक को मार डाला। युधिष्ठिर की मानसिक शांति के लिए कृष्ण ने युक्ति पूर्वक एक कहानी सुनायी कि चार्वाक कृतयुग में एक राक्षस था। उसने बदरीवन में तपस्या करके

ब्रह्मा को प्रत्यक्ष किया और यह वरदान पाया था कि ब्राह्मणों को छोड़ अन्य लोगों के हाथों में उसकी मौत न हो।

इसके बाद युधिष्ठिर यथाविधि राज्याभिषिक्त हुआ। धौम्य ने एक वेदिका का निर्माण कराया। उस पर व्याघ्र चर्म बिछवा कर उस पर युधिष्ठिर तथा द्रौपदी को बिठाया, तदुपरांत धौम्य ने आग पैदा करके युधिष्ठिर के द्वारा उस में होम कराया। तब कृष्ण ने एक शंख-द्वारा युधिष्ठिर का अभिषेक करके आशीर्वाद दिया कि तुम सारी पृथ्वी का राजा बनो। इस पर धृतराष्ट्र तथा जनता ने अपनी सम्मत्ति प्रकट की। मंगल वाद्य बज उठे। युधिष्ठिर ने जनता के द्वारा उपहार ग्रहण किया और ब्राह्मणों का सत्कार किया।

इसके बाद युधिष्ठिर ने जनता से कहा–"महाजनो, महाराजा धृतराष्ट्र हमारे लिए देवता के समान हैं। हमारे प्रति जो लोग विश्वास रखते हैं, वे सब उन्हीं के शासन को स्वीकार करें। हम लोग केवल उनकी सेवा करने के लिए जीवित हैं। मुझे तथा आप लोगों के लिए भी वे ही राजा हैं।"

तब युधिष्ठिर ने भीम को युवराजा घोषित किया और विदुर को मंत्री नियुक्त किया। संजय कोशाध्यक्ष तथा सलाहकार बना। नकुल भृत्यों का वेतन निर्णय करने, अर्जुन राज्य का योग-क्षेम देखने तथा धौम्य देवता एवं ब्राह्मणों के कार्य देखने नियुक्त हुए। सहदेव का कार्य सदा युधिष्ठिर के साथ रहने का था।

ये सारे कार्य होने के बाद युद्ध में मरे हुए लोगों के लिए श्राद्ध कार्य किये गये। भूदान किये गये। धृतराष्ट्र ने अपने पुत्रों के लिए तथा युधिष्ठिर ने द्रोण, कर्ण, धृष्टद्युम्न, घटोत्कच और अभिमन्यु के लिए अलग-अलग श्राद्ध कार्य किये। मृत व्यक्तियों के स्मारकों के रूप में सराय, तालाब आदि बनवाये गये। तब जनता के कुशल-क्षेम का ख्याल रखते युधिष्ठिर शासन करने लगा।

मित्र-भेद

[९]

दमनक ने करटक को कौओं के द्वारा सर्प को मार डालने की कहानी सुनाकर कहा–"इस दुनिया में अक़्ल से बढ़कर कोई ताक़त नहीं है। बुद्धिबल रखनेवाला खरगोश सिंह के अहंकार को भड़का कर उसकी मौत का कारण नहीं बना?"

"सो कैसे संभव हुआ?" करटक ने पूछा। दमनक ने यह कहानी सुनाई:

छाया के द्वारा मौत

एक समय जंगल में भासुरक नामक एक शक्तिशाली सिंह था। वह अपने बल पर घमण्ड़ करता था, रोज वह हिरण, खरगोश और अन्य जानवरों को अकारण ही मार डालता था।

एक दिन जंगल में बसने वाले हिरण, बकरें, भैंस, खरगोश और अन्य जानवर सलाह-मशविरा करके सिंह के पास गये और बोले–"महाराज, आप कृपया आइंदा आपकी आँख में जो भी जानवर पड़े, उसे मारना बंद कीजिए। आपका पेट भरने के लिए रोज़ एक जानवर पर्याप्त है। ऐसी हालत में आप इतने सारे जानवरों को रोज़ क्यों मार डालते हैं? हमारे साथ आप एक समझौता कर लीजिए। आज से हम लोग बारी-बारी से रोज़ एक जानवर को आपके पास भेजेंगे। आपको अपनी जगह से हिलने की भी ज़रूरत न होगी। अगर आप हमारी इस शर्त को मान लेंगे तो बिना किसी प्रकार की मेहनत के आपको अपना आहार मिलता रहेगा। राजा को चाहिए कि प्रजा की संपत्ति का इस तरह अनुभव करे जैसे

अंतिम पृष्ठ का चित्र

गायों से दूध दुहकर थोड़ा बछड़ों को भी छोड़ दे, बाक़ी वह पी ले, साथ ही गायों की वृद्धि भी होती रहे। तभी राजा का शासन धर्मपूर्वक चल सकता है। गायों का दूध दुह लेना ही नहीं, बल्कि उन्हें चारा भी देना है। पेड़ को खाद देकर, पानी डालने पर ही वह फल देता है। आखिर छोटे से छोटा बीज भी, सही पोषण पाकर महा वृक्ष बन जाता है और लाभ पहुँचा देता है। प्रजा की भी यही बात है। उनकी रक्षा ठीक से हो तो वे राजा को अपार संपत्ति दे सकते हैं।"

"तुम लोगों का कहना सच है। मैं तुम्हारी शर्त को मान लेता हूँ। लेकिन एक भी दिन अगर कोई जानवर मेरे पास न आया तो मैं तुम सब का प्राण ले लूँगा।" सिंह ने जवाब दिया। सारे जानवरों ने इसे मान लिया और शपथ लेकर लौट गये।

उस दिन से सभी जानवर जंगल में स्वेच्छापूर्वक घूमने लगे। वे सब बारी-बारी से रोज़ दुपहर को एक एक जाति के जानवर को सिंह के पास भेजने लगे। एक बार खरगोश की बारी आयी। सिंह का आहार बनने की बात उठते ही उसे बड़ा दुख हुआ। वह आराम से एक एक क़दम बढ़ाते सिंह को मार डालने का उपाय सोचते धीरे से चलने लगा।

उधर सिंह के खाने का वक़्त बीत गया, मगर खरगोश तब भी सोच रहा था। उसने यों सोचा :

"इस खूँख्वार सिंह का किसी भी उपाय से सही वध करना है। लोग कहते है कि अक़्लमंद व्यक्ति जो साध न सकता हो, धृढ़ निश्चयी जिस पर विजय न पा सकता हो, मधुर वचन बोलनेवाला जो प्राप्त न कर सकता हो, ऐसी कोई बात नहीं है।"

यों सोचते वह एक कुएँ के पास आ पहुचा। उसने कुएँ में झांककर देखा तो उसे अपना प्रतिबिंब दिखाई दिया। उसने

पल भर सोचा—"उस कमबक़्त सिंह को मारने के लिए एक बढ़िया उपाय सूझ रहा है। उसे रोष दिलाकर इस कुएँ में गिर कर मरवा डालूँगा।"

ये ही बातें सोचते वह विलंब करके सिंह के पास गया। समय पर खाना न मिलने की वजह से भूख के मारे सिंह अत्यंत क्रुद्ध था। वह अपनी जीभ चाटते मन में सोच रहा था—"कल मैं सारे जानवरों को मार डालूँगा।"

इतने में खरगोश आकर सिंह के सामने आ खड़ा हुआ।

खरगोश छोटा सा जानवर है, तिस पर भी वह विलंब से आया है। सिंह खरगोश को देख क्रोध में बोला—"तुम्हें खाने से मेरा आधा पेट भी नहीं भरता, फिर भी तुम देरी से आते हो! कल मैं बाक़ी सभी जानवरों को खा डालूँगा।"

खरगोश सिंह के सामने साष्टांग गिरकर बोला—"महाराज, मेरे द्वारा या अन्य जानवरों का भी कोई दोष नहीं है। मेरे देरी से आने तथा आज आपको थोड़ा सा भोजन मिलने का कारण बताता हूँ; सुनिये। आज आपके भोजन बनने की बारी खरगोशों की आयी। जानवरों ने सोचा कि एक खरगोश से आपका पेट नहीं भरेगा। यह सोचकर मुझ से मिला कर पांच खरगोशों को आपके पास भेजा। हम पांचों आपके पास आ रहे थे, तब ज़मीन में रहनेवाले एक गड्ढे में से एक बहुत बड़ा सिंह ऊपर आया और बोला—"तुम लोग कहाँ जाते हो? तुम्हारी आयु समाप्त हो गयी है। अब अपने आराध्य की प्रार्थना करो।" हमने बताया कि 'हमें समझौते के अनुसार दुपहर तक भासुरक नामक सिंह का आहार बन जाना है।' इस पर उसने बताया—'तुम्हारी बातों का कोई मतलब नहीं है। यह जंगल मेरा है। तुम लोगों को मेरे साथ समझौता करना है। किसी भासुरक नामक चोर के साथ नहीं। उस भासुरक को यहाँ पर

बुला लाओ, हम फ़ैसला कर लेंगे, कौन इस जंगल का राजा है? हम में जो जीतेगा वही इस जंगल के सभी जानवरों का अधिपति होगा।' इसी प्रकार मैंने आपके पास आकर ये बातें सुनाईं। मेरी देरी का यही कारण है। उस सिंह ने यह सोचकर बाक़ी जानवरों को अपने पास रख लिया कि शायद मैं लौटकर न जाऊँगा। इसीलिए मैं आपकी दृष्टि में थोड़ा सा भोजन प्रतीत होता हूँ।"

ये बातें सुन सिंह बोला—"तब तो तुम मेरे प्रतिद्वन्द्वी सिंह को दिखाओ। जानवरों पर मेरा जो क्रोध पैदा हो गया है, उसे उस सिंह पर प्रकट करके मैं अपने मन को शांत कर लूँगा। यदि शीघ्र शत्रु का वध न करे तो वह बलवान बनकर हमें ही मार डालेगा।"

इस पर खरगोश ने समझाया—"महाराज, शत्रु की ताक़त को जाने बिना उसके साथ युद्ध करने जाना उचित नहीं होता।"

"तुम यह बकवास क्यों करते हो? मुझे उस सिंह को दिखाओ। मैं उसे मार डालूँगा।" सिंह ने खीझ कर कहा।

खरगोश सिंह को कुएँ के पास ले गया और बोला—"यही सिंह का निवास रहने वाला क़िला है।" तब खरगोश ने कुएँ में झांककर देखा और कहा—"आपके आने का समाचार जानकर वह सिंह शायद घबरा गया है, मैं आपको उसे दिखाता हूँ।"

मूर्ख सिंह ने कुएँ में झांककर देखा। अपने प्रतिबिंब को दूसरा सिंह समझ कर क्रोध में आकर गरज उठा। उसका गर्जन कुएँ में प्रतिध्वनित हो उठा। उसने सोचा कि शत्रु उसे ललकार रहा है। तब वह मूर्ख भासुरक क्रोधावेश में आया और उस गहरे कुएँ में कूद पड़ा।

खरगोश की ख़ुशी का ठिकाना न रहा। दुष्ट सिंह से पिंड छुड़ाने के कारण बाक़ी जानवरों ने खरगोश की तारीफ़ की और उस दिन से सभी जानवर जंगल में आराम से रहने लगे।

१४७. न्यूक्लियर पनडुब्बी "स्केट"

आज अणुशक्ति के द्वारा चलनेवाली पनडुब्बियाँ (जलांतर्गामी) अनेक देशों के पास हैं। "स्केट" नामक पनडुब्बी अणुशक्ति से चलती है। यह अमेरिका में बनाई गई है। अणुशक्ति से चलने वाली पनडुब्बियाँ पानी के नीचे बहुत समय तक काफ़ी दूर प्रदेशों तक यात्रा कर सकती हैं। ईंधन की उसे कई दिनों तक जरूरत नहीं होती।

"स्केट" ने एक महत्वपूर्ण कार्य यह किया है कि वह उत्तरी ध्रुव के बर्फ़ीले प्रदेश के नीचे यात्रा करके १७ मार्च १९५९ को ध्रुव के पास बर्फ़ के नीचे से ऊपर आ गयी। यह बात गुप्त रखी गयी कि उस प्रदेश में बर्फ़ कितनी मोटाई तक है।

उत्तरी ध्रुव तक पहुँचने के लिए "स्केट" को चार हज़ार से ज्यादा मील की यात्रा करनी पड़ी। इस यात्रा में १०६ लोगों ने भाग लिया था।

Photo by Sharma Studio-Bhilwara
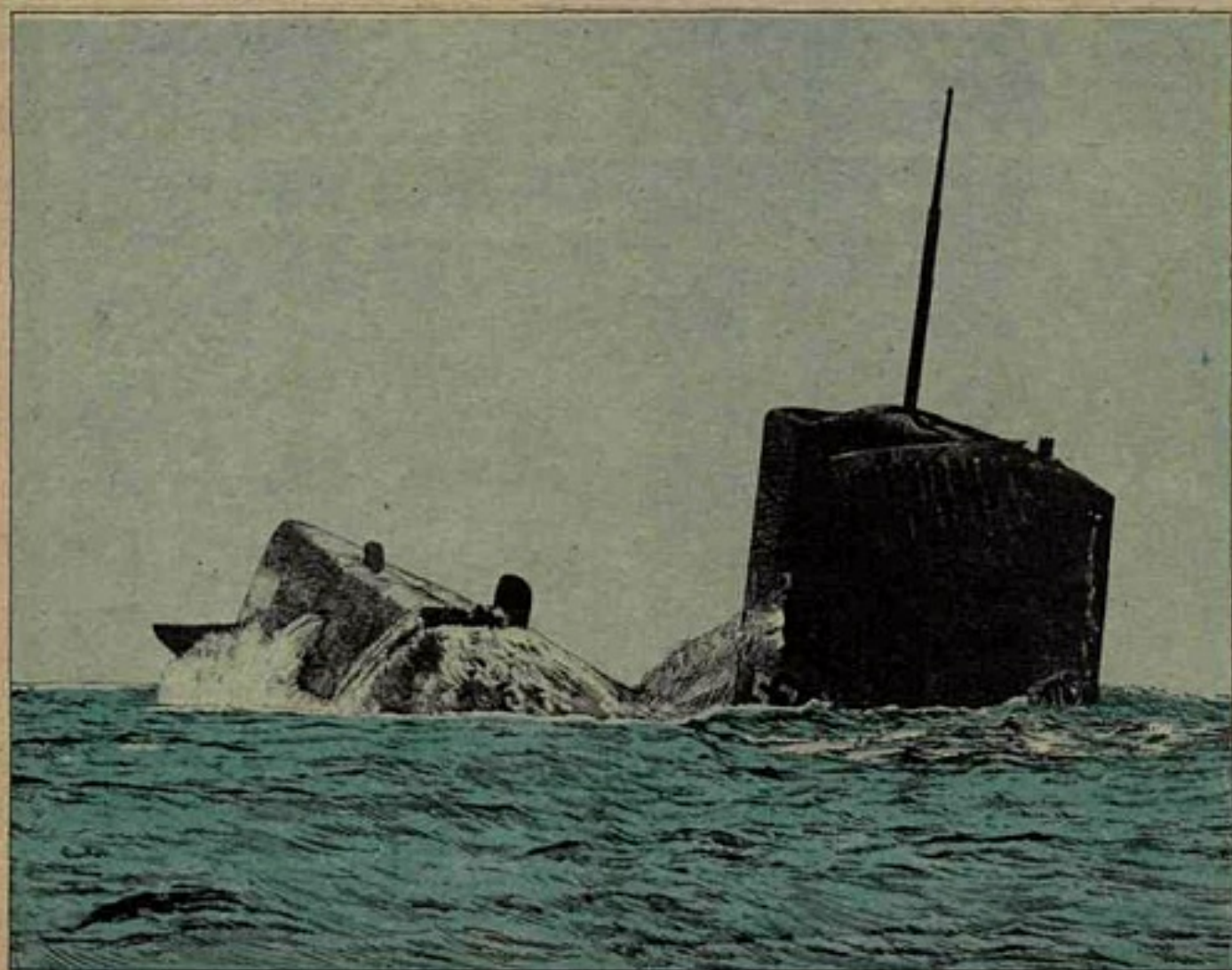
पुरस्कृत परिचयोक्ति

मुझको बहुत लगी है भूख !

प्रेषक : मेहरसिंह डावर,

Photo by Pasala krishna kumar
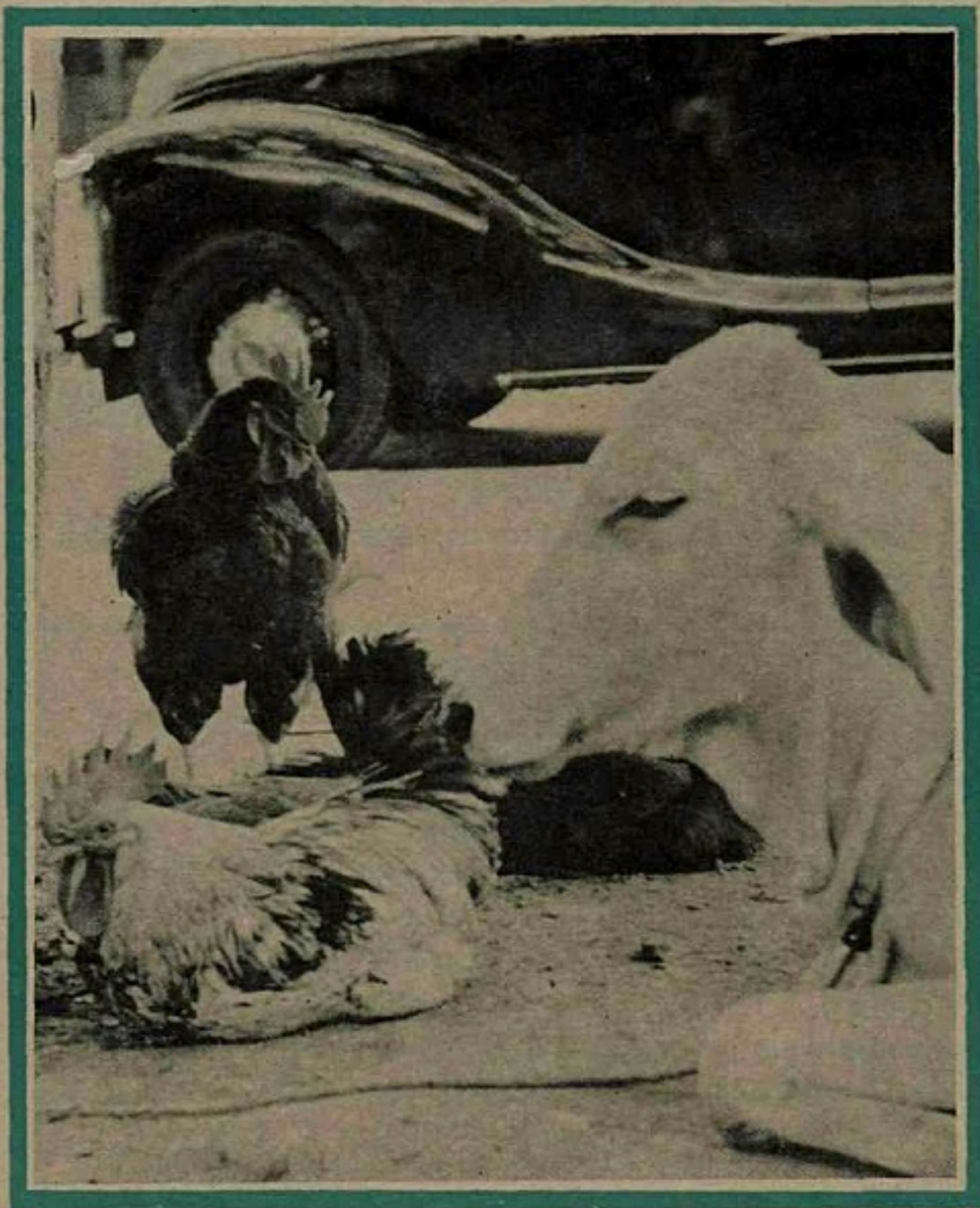
मेसर्स डाबर रेडियो
कार्पोरेशन, मथुरा

आओ मिलकर सेंके धूप !!

पुरस्कृत
परिचयोक्ति

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २०)

★

* परिचयोक्तियाँ अप्रैल ५ तक प्राप्त होनी चाहिए। सिर्फ़ कार्ड पर ही लिख भेजें।
* परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्द की हों और परस्पर संबंधित हों, पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ जून के अंक में प्रकाशित की जायंगी!

चन्दामामा

इस अंक की कथा-कहानियाँ-हास्य-व्यंग्य

दूसरा मुखपृष्ठ:
मैसूर की नर्तकी

तीसरा मुखपृष्ठ:
बांग्रा नृत्य

Printed by B. V. REDDI at The Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for Chandamama Publications, 2 & 3, Arcot Road, Madras-600026. Controlling Editor: 'CHAKRAPANI'

Photo by : SURAJ N. SHARMA

BHANGRA DANCE

मित्र-भेद